चकमक

जुलाई, 2004 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00

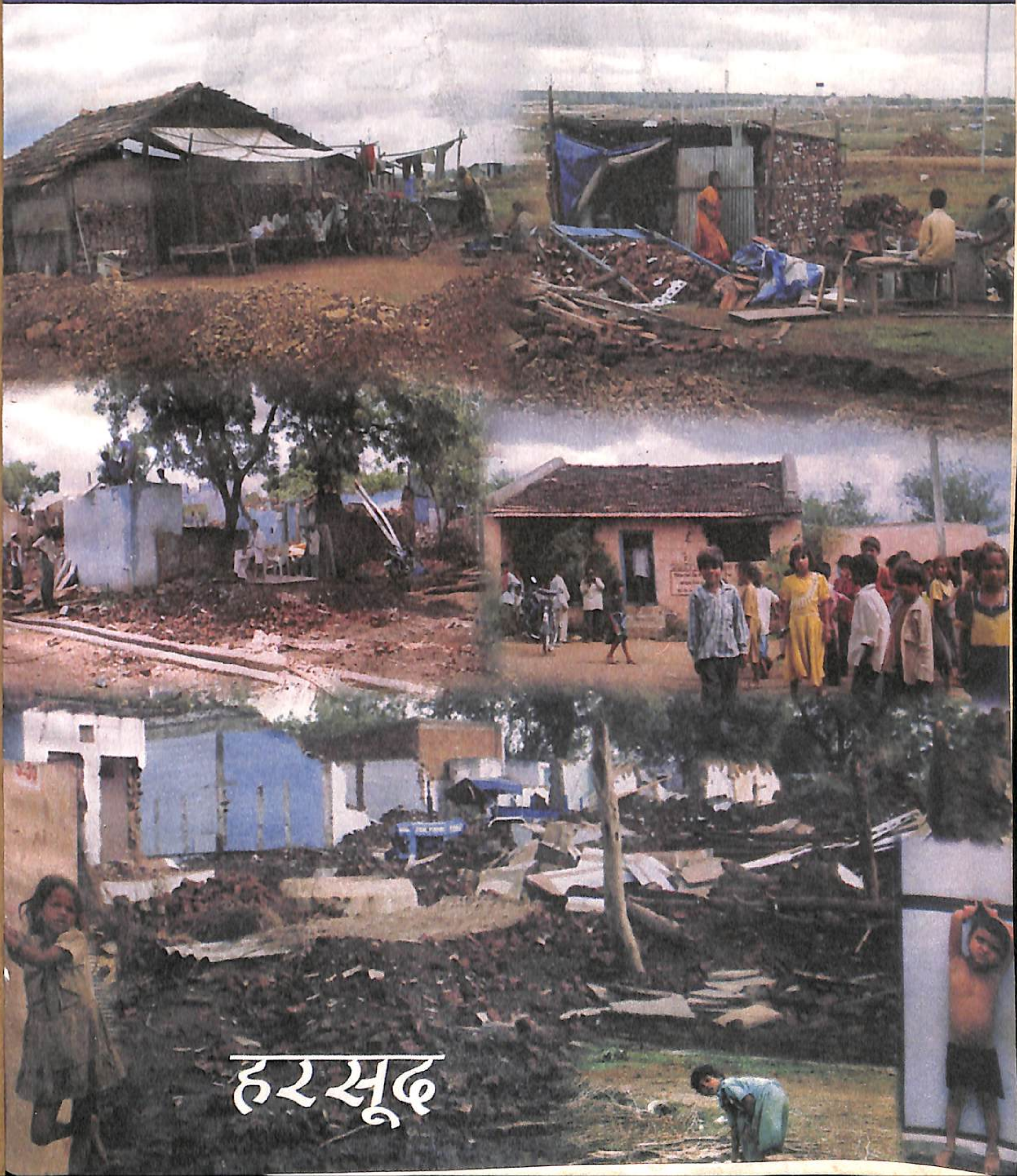

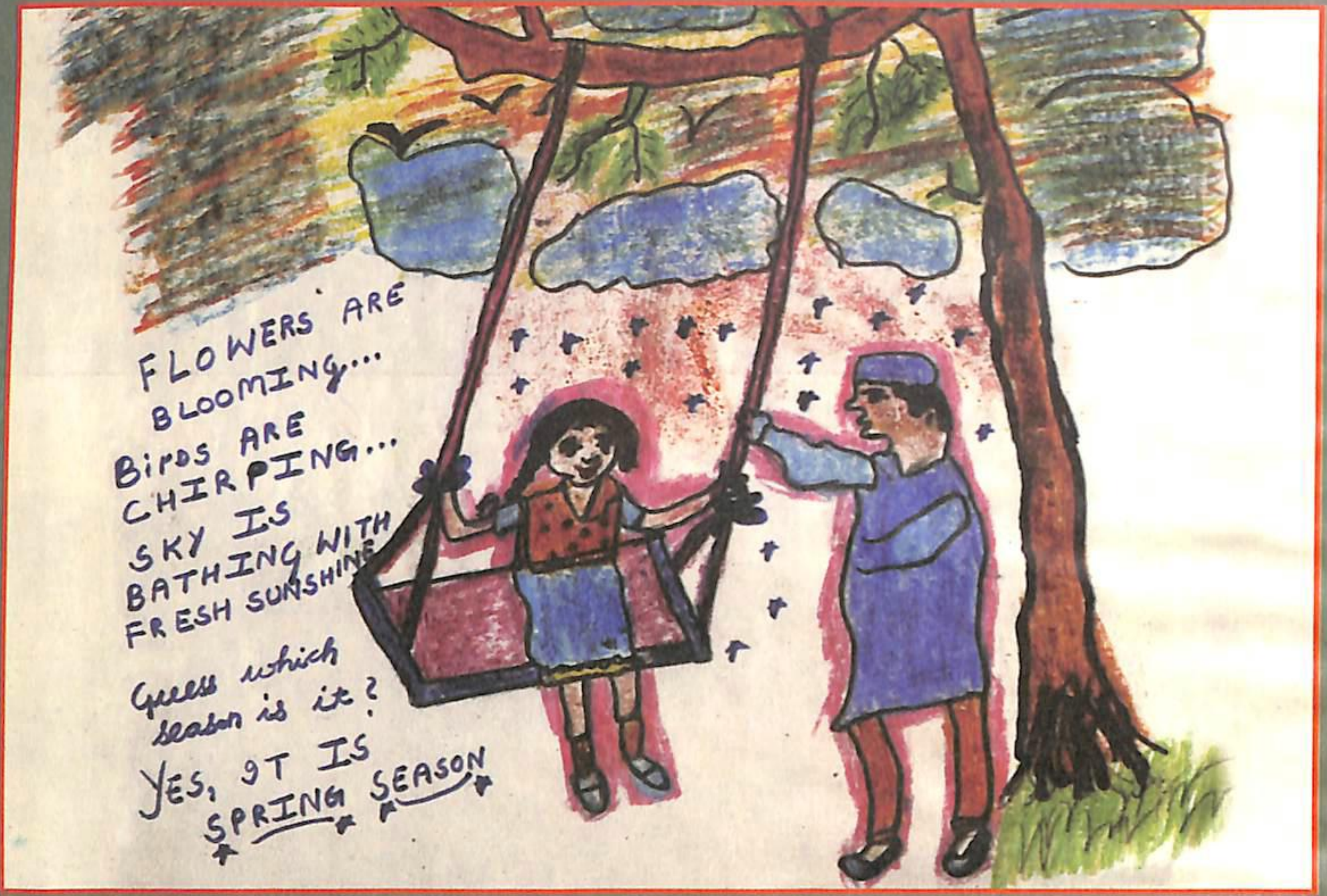

करनदीप, पाँचवीं, सरकारी मॉडल स्कूल, चंडीगढ़

शाकिर शाह, आठवीं, हरणगाँव, देवास, म.प्र.

055452

इस बार की बात . . .

जुलाई जाने की तैयारी में है! बारिश ज़रा देर से आई है पर आई पूरे साजोसामान के साथ। उम्मीद है दिनों रूकेगी। क्या करते हो तुम बारिश में ? नाव चलाते हो शायद! भीगते हो! या मेंढक नचाते हो? हम अपने बचपन में नए-नए आम के पौधे ढूँढते थे, उनकी गोही को पत्थर पर घिसकर बढ़िया सीटी बनाते! और जैसे ही गुरूजी इधर उधर होते, एक बार बजा देते। बड़ी अजीब-सी बात हुआ करती! दो चीज़ों का ख्याल रखना पड़ता। एक तो गुरूजी को सुनाई न दे। और दूसरे कुछ इस तरह से बजे कि पूरी कक्षा वाह -वाह कह उठे। वाह -वाह सुनना अच्छा लगता था और उसके बाद गुरूजी की पिटाई बुरी। हालाँकि पिटने वाला सिर्फ वही नहीं होता था जिसको अभी-अभी दाद मिली होती थी। पिटाई में लगभग सारी कक्षा शरीक होती। क्योंकि कोई भी गुरूजी को बताता नहीं था कि सीटी बजाने वाला उस्ताद कौन था। गुरूजी को यह हार बहुत बुरी लगती।

बारिश के दिनों में समय अक्सर कम पड़ जाता था। वही चार-पाँच स्कूल के घण्टे ही मिलते, जिनमें हम थोड़ी बहुत मस्ती कर पाते थे। घर पर तो बस दालान पर बैठकर बुलबुले गिनते। और अगर आसपास कोई न हो तो दो-चार बार हाथ बढ़ा उन्हें उठाने की कोशिश कर लेते। ज़्यादा से ज़्यादा आठ -दस गिंजाइयों को पकड़कर उनके ऊपर माचिस की तीली रख देते, अरे भई खेत जोतने के लिए। लेकिन अब बैलों को हाँकने के लिए वैसी आवाज़ भी तो करनी है जैसी खेतों में किसान करते हैं। इस आवाज़ से बैलों पर कोई फर्क पड़े न पड़े पर घर वाले हमारी हरकतों से वाकिफ हो जाते। और हमारी खेती रोक दी जाती।

एक और चीज़ जो हमें खूब खींचती वो होती ... गेड़ी! बारिश आने के पहले इसके लिए हमारे इंतजाम शुरू हो जाते। जहाँ कहीं बाँस की दो बड़ी डंडियाँ दिखतीं... लगता जैसे कह रही हों - हमें जल्दी से छुपा दो। बारिश में मेंढक की तरह एक दिन ये गेड़ियाँ हर तरफ नज़र आने लगतीं। उन दिनों हमारी हिन्दी की किताब में एक पाठ था। कैसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी छुपते घूमते थे। यही सेनानी हमारा कोड होता था। नलकूप पर गेड़ी लेके मिलो को हम कहते सेनानी नागपुर! ऐसी हजारों चीजें हुआ करतीं। हालाँकि घर के बड़े, गुरूजी आदि कितनी ही बंदिशें होतीं, पर इन्हें पार करने में बड़ा मज़ा आता। हालाँकि बचपन में सभी बड़े ऐसी शरारतें करते हैं, फिर बड़े होकर वे इतनी बंदिशें क्यों लगाते हैं? खैर! उम्मीद है जीवन की तमाम बंदिशों को तुम इतनी ही सहजता से पार करोगे!

● चकमक

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 20 - अंक-1 जुलाई 2004

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे

सहयोग
कविता सुरेश
राकेश खत्री
शिवनारायण गौर
शशि सबलोक

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-7/ एच आई जी – 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन : 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-20 अंक-1 जुलाई 2004

क्या-क्या है इस अंक में

कहानी

क्यों 18
मच्छरों ने खोला ब्लड-बैंक 36

विशेष लेख

डूबते हरसूद के हाल 6
साँस लेना और बोलना 16

चकमक चर्चा

विस्थापन 26

कविताएँ

दादाजी का हुक्का 3
मकड़ी और मक्खी 30

अपनी प्रयोगशाला

विज्ञान प्रयोग 4

हर बार की तरह

इस बार की बात 1
इस अंक में 2
मेरा पन्ना 10
माथापच्ची 24
चकमक समाचार 31
खेल समाचार 33
चित्र पहेली 34
खोज खबर 40

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

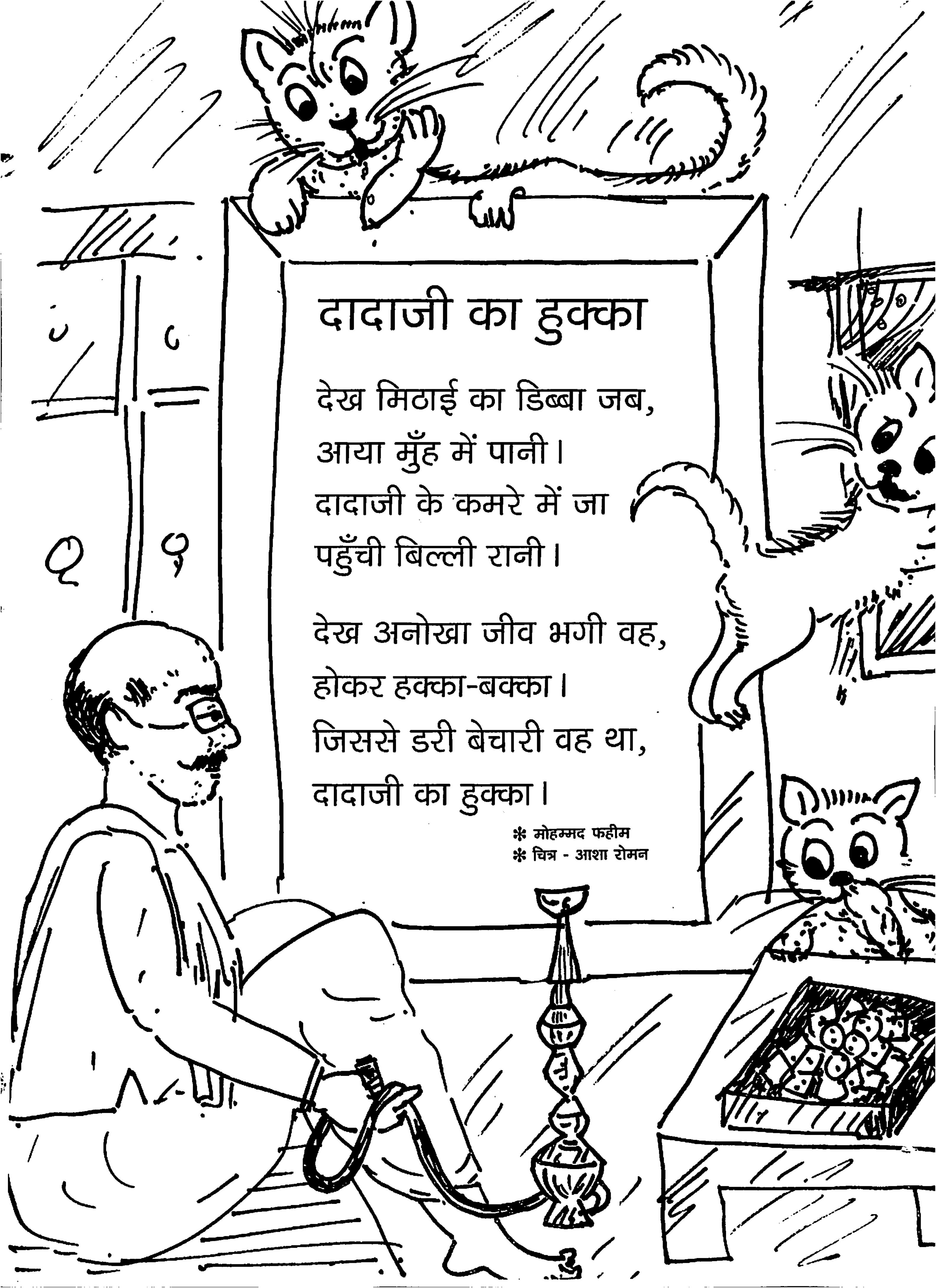

दादाजी का हुक्का

देख मिठाई का डिब्बा जब,
आया मुँह में पानी।
दादाजी के कमरे में जा
पहुँची बिल्ली रानी।

देख अनोखा जीव भगी वह,
होकर हक्का-बक्का।
जिससे डरी बेचारी वह था,
दादाजी का हुक्का।

* मोहम्मद फहीम
* चित्र - आशा रोमन

बोलो भाई कितने सिक्के?

नहीं इसके लिए तुम्हें कलकत्ते के काले जादू की नहीं बस एक सिक्के और दो आइनों की ज़रूरत होगी। सिक्के और आइनों को चित्र में दिखाए तरीके से रखो। आइनों के एक सिरे को अपनी जगह पर रखते हुए बाहरी सिरों को पकड़कर पास-पास लाते जाओ। हर बार शीशे में कितने सिक्के दिखे?

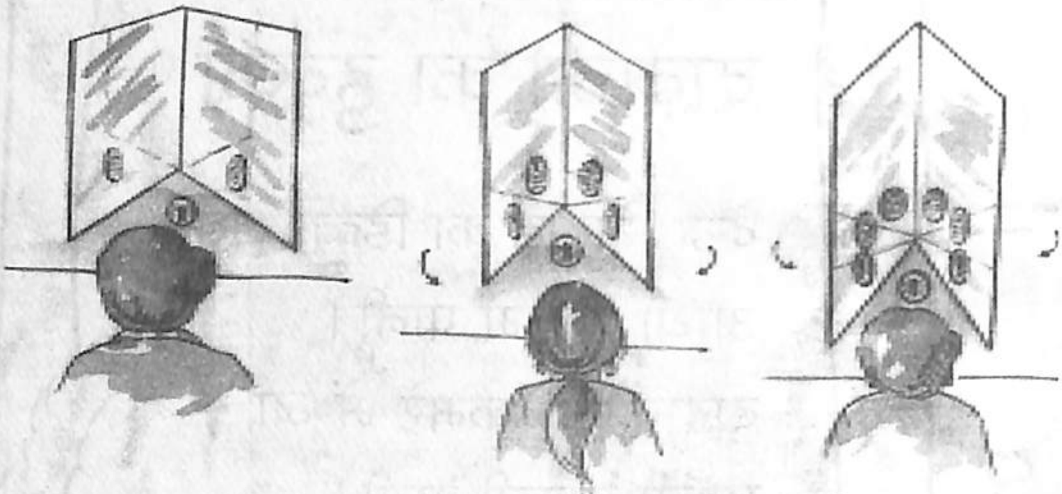

टाइम कितना हुआ है?

घड़ी के सामने आइना है और पीछे तुम। इसी तरह रहते हुए बताओ कि घड़ी कितना बजा रही है? चलो हम कुछ मदद किए देते हैं। सिक्के वाले प्रयोग में सिक्के की जगह घड़ी रख दो। आइनों के भीतरी सिरों को अपनी जगह पर रखते हुए बाहरी सिरों को इस तरह सरकाओ कि एक आइने में दिख रही घड़ी का प्रतिबिम्ब दूसरे आइने में दिखे। अब दिखा समय? एक और तरीका है जो चित्र में दिख रहा है। किस तरीके से समय देखना आसान रहा?

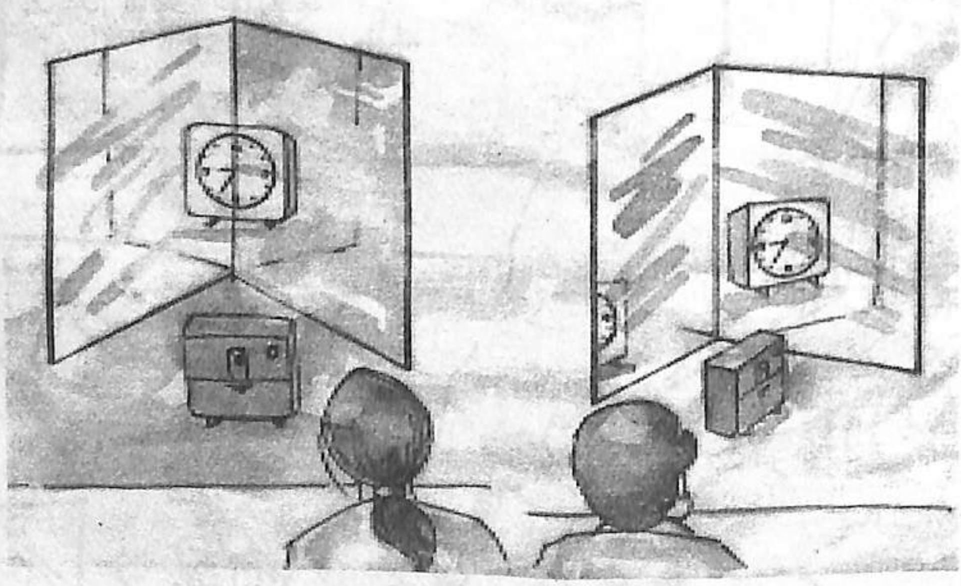

बिन्दी गायब

कागज़ पर बने चित्र में इक घर है जिसमें इक लड़की और इक बड़ी सी बिन्दी रहते हैं। इस चित्र को दोनों हाथों से एक हाथ की दूरी पर पकड़ो। बाईं आँख बन्द कर चित्र को धीरे-धीरे अपनी ओर लाओ। तुम्हारी नज़र चित्र में दिख रहे दरवाज़े पर टिकी हो इस बात का खास ख्याल रखना। क्या हुआ? क्या बिन्दी दिख रही है? कहाँ गई बिन्दी ?

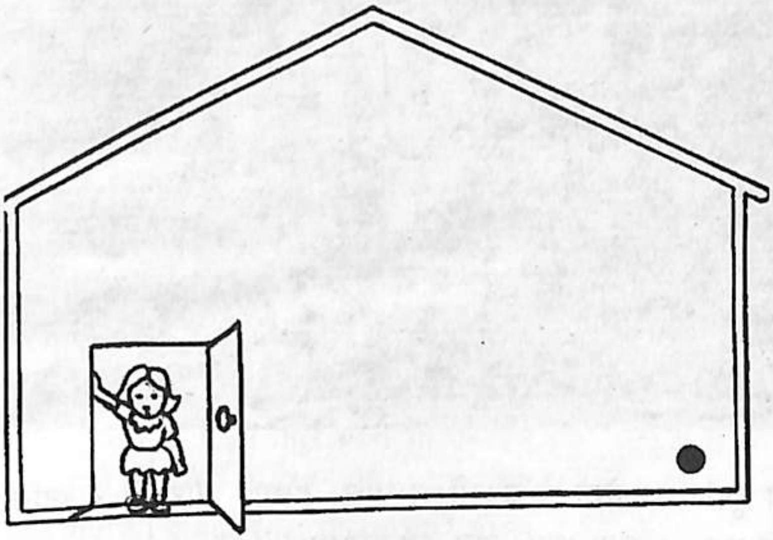

बस दो मिनट के खेल

चित्र में दिखाए तरीके से दीवार के सहारे खड़े हो। तुम्हारा एक पाँव दीवार से एकदम सटा हुआ हो इसका ख्याल रखना। अब एक आसान सा काम करो। दूसरे पाँव को दीवार से दूर करने की कोशिश करो। कर पाए?

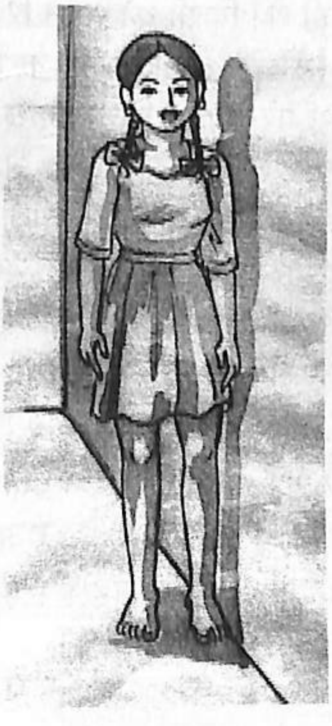

सीधे खड़े होकर चित्र में दिखाए तरीके से पाँव पकड़ो। अब यही काम आँखें बन्द करके करो। क्या हुआ? यह झूमना-झामना क्या हो रहा है?

चित्र : विवेक वर्मा व कैलाश दुबे

डूबते हरसूद के हाल

तुम्हें कैसा लगेगा अगर तुम्हारा भरा पूरा शहर डूबने जा रहा हो? तुम्हें अपने हाथों अपना घर तोड़ना पड़े! जिस स्कूल में तुम पढ़ते आए हो कोई कबाड़ी उसका सौदा कर रहा हो। हर तरफ यह कशमकश हो, कि क्या-क्या गाड़ी या सर पे लादकर ले जा सकते हैं और क्या-क्या छोड़ना ही होगा। जब तुम्हें मालूम पड़े कि जिन चीज़ों के बगैर रहने का सोच भी नहीं सकते थे, उन्हें तुम अब आखिरी बार देख रहे हो। एक पुराने शहर और एक बड़े इलाके पर इन दिनों यही बीत रही है। यह सब इंदिरा सागर परियोजना नाम से बन रहे एक बड़े बाँध के कारण हो रहा है। इस बारिश इसी बाँध से रुके पानी से यह इलाका डूब जाएगा। सिंचाई और बिजली जैसी सुविधाओं के नाम पर हमारे यहाँ बाँध बनते रहे हैं। देश भर से लोग आ रहे हैं, देख रहे हैं। और लोगों को इस बर्बादी के बारे में बता रहे हैं।

यह हरसूद और उसके आसपास के 119 गाँव की कहानी है। हरसूद मध्यप्रदेश के खण्डवा ज़िले का एक शहर है। यहाँ 22000 लोग रहते हैं। हज़ारों मवेशी होंगे। लाखों पेड़ होंगे, जिन्हें डूबना ही है। सैंकड़ों ऐसी जगहें होंगी जिन्हें यहाँ के लोगों ने बरसों सम्भाला होगा। और भी न जाने क्या-क्या। सब डूब जाएगा।

मई के आखिरी हफ्ते की ही तो बात है जब लोगों से कहा गया कि अब वे छनेरा में रहें। खेती, घर, शहर सबके बदले मिली ऊबड़-खाबड़ ज़मीन। जहाँ उन्हें नए सिरे से ज़िन्दगी शुरू करनी है। सरकारी ऐलान हुआ 'तीस जून हरसूद छोड़ने की आखिरी तारीख होगी'। जून आते-आते लोगों को घर तोड़ने ही थे। किसी को अपने रिश्तेदार के घर जाना पड़ा। किसी ने आसपास के किसी गाँव में महँगे किराए पर मकान लिया। कुछ ऐसे भी लोग थे जिन्हें कुछ सूझ ही नहीं रहा था कि वे कहाँ जाएँ। सरकार ने और बारिश ने थोड़ी और मोहलत दे दी। छह जुलाई यानी वो दिन जब हम हरसूद में यह सब होता देख रहे थे। इस उजड़े शहर में या तो उदास लोग थे, या फिर किसी भी विरोध को दबा देने में माहिर हमारी पुलिस के जवान। उनकी मुश्किलों के बारे में हम तुम्हें क्या बताएँ। हमने कुछ बच्चों से बात की है। वो तुम चकमक चर्चा में पढ़ना। कुछ फोटो भी दे रहे हैं। इससे वहाँ की स्थिति समझने में मदद मिलेगी।

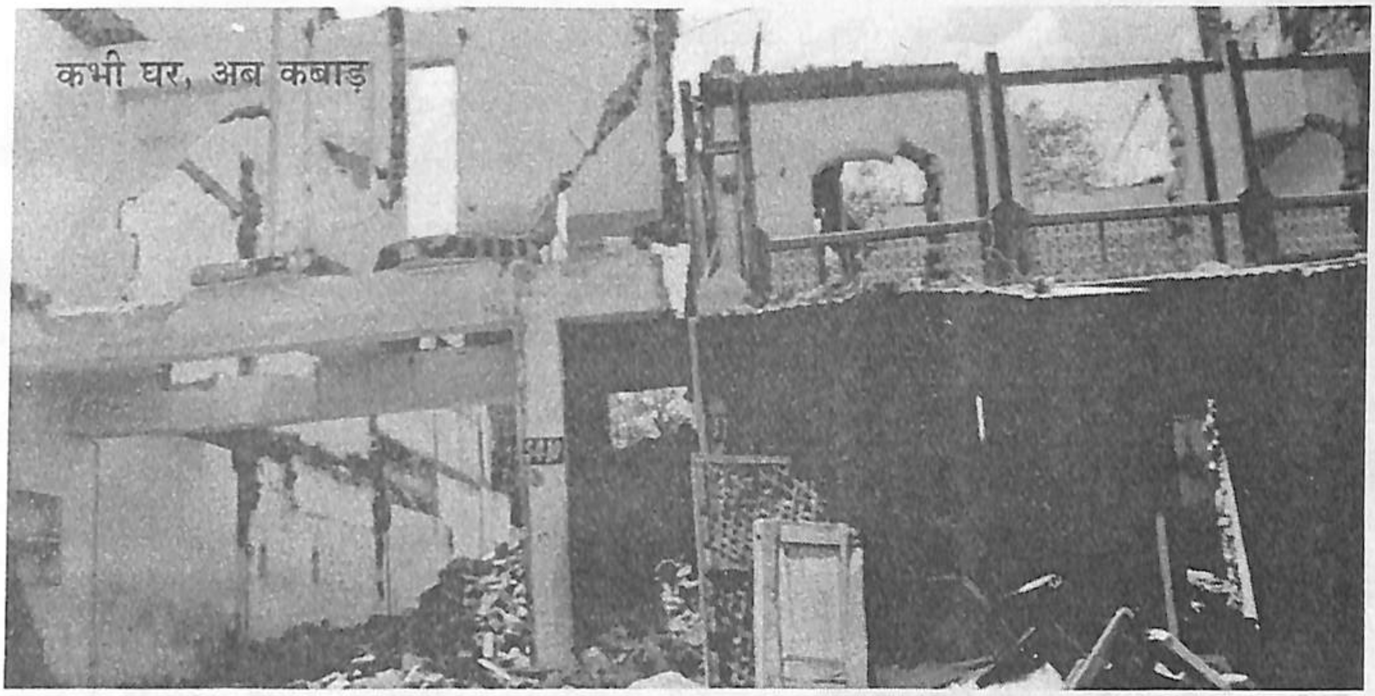

कभी घर, अब कबाड़

तुम्हारी उम्र के पढ़ने वाले बच्चे भी परेशान हैं। डूबने से बचने के लिए लोग इधर-उधर चले गए हैं। उनके साथ खेलने वाले दोस्त बिछड़ गए हैं। स्कूल टूट गया है। उनके खेलने की जगह डूबने वाली है। अब उन्हें नई जगह पर रहना है। नए साथियों को तलाशना है। नए स्कूल में पढ़ने जाना है। यह माहौल बच्चों को अटपटा लग रहा है।

ऐसी योजनाएँ बनाने वाले लोग कहते हैं कि विकास के लिए बाँध ज़रूरी हैं। लेकिन सोचो क्या लोगों को ठीक ढंग से नई जगह पर बसाना ज़रूरी नहीं है? और जिन लोगों की आजीविका के साधन खत्म हो गए हैं, उन्हें नए रोज़गार देने की ज़रूरत नहीं लगती? जिन लोगों के खेत, बगीचा डूब गए हैं, वे कैसे अपना जीवन चलाएँगे? एक तरफ हम कटते जा रहे जंगलों से चिंतित हैं, दूसरी तरफ ऐसे ही बाँधों से लाखों एकड़ जंगल डूब जाएँगे। खेती लायक मीलों ज़मीन डूब जाएगी।

चलो छाँह तो हो गई पर बारिश में क्या होगा।

मेरा घर क्यों तोड़ दिया?

इंदिरा सागर परियोजना में बनने वाले बाँध की ऊँचाई अभी 245 मीटर है। लेकिन यह 254 मीटर ऊँचा बनने वाला है। अभी हालात यह है कि 119 गाँव इसी बरसात में खाली करने पड़ रहे हैं। ऊँचाई बढ़ने पर और भी कई गाँव डूब जाएँगे।

बच्चे तो ठीक से समझ भी नहीं पा रहे हैं कि सब अपना घर क्यों तोड़ रहे हैं। सरकार ने कुछ टीन के शेड रहने के लिए बनाए हैं। पर उनकी हालत ठीक नहीं है। जब हम लोग इस इलाके में गए तब तक कोई भी इन शेडों में रहने के लिए नहीं आया था।

घरों के बदले मिले टीन के टपरे....

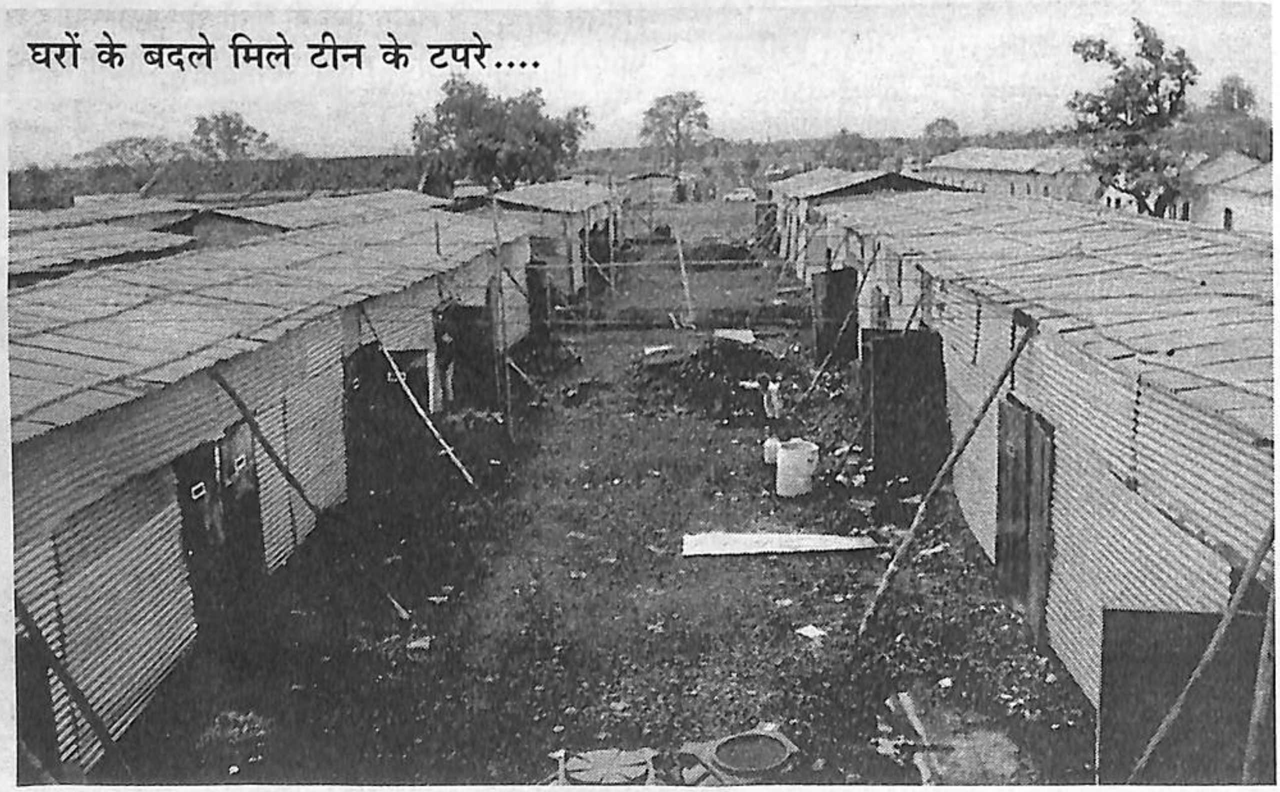

नीचे के चित्र में है हरसूद के पास के भवरली गाँव का स्कूल। बस कुछ ही दिनों का मेहमान। इस इलाके के सैकड़ों स्कूल तोड़ने पड़े हैं। वैसे तो जुलाई में स्कूल खुलते, लेकिन जब रहने का ही ठिकाना नहीं है तो फिर क्या पढ़ाई, क्या स्कूल! कुछ पालक कहते हैं कि वे अपने बच्चों को अगले साल पढ़ाएँगे। कुछ ने बच्चों को रिश्तेदारों के घर भेज दिया है। हरसूद शहर में ही 17 सरकारी और गैर सरकारी स्कूल थे। कई बच्चे जिन्हें पूरक परीक्षा में बैठना था वे अपने स्कूल को तलाशते रहे। कई बच्चों को अभी टी.सी. भी नहीं मिल पाई है। हो सकता है उन्हें पढ़ाई ही छोड़नी पड़े।

शिवनारायण गौर
सभी फोटो : पल्लव थुदगर

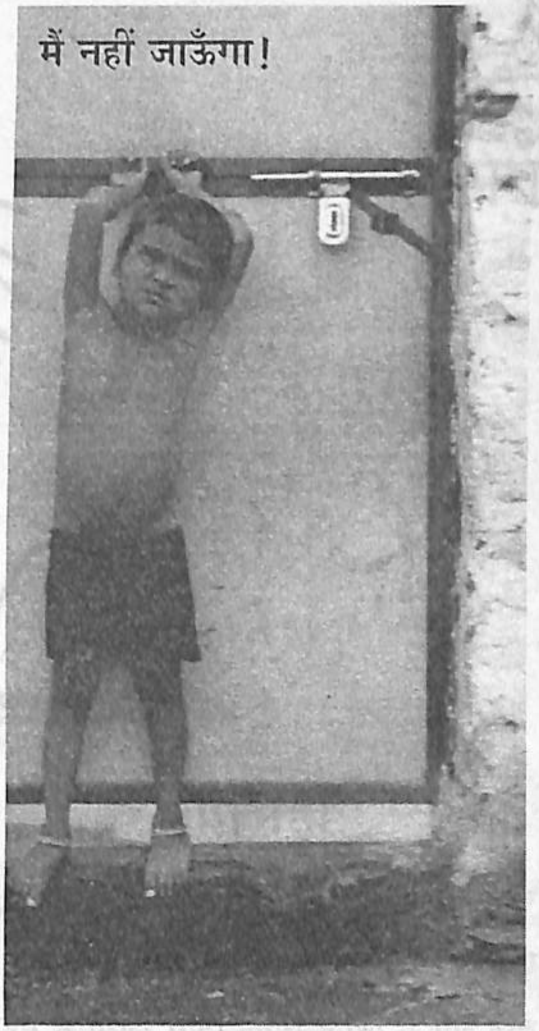
मैं नहीं जाऊँगा!

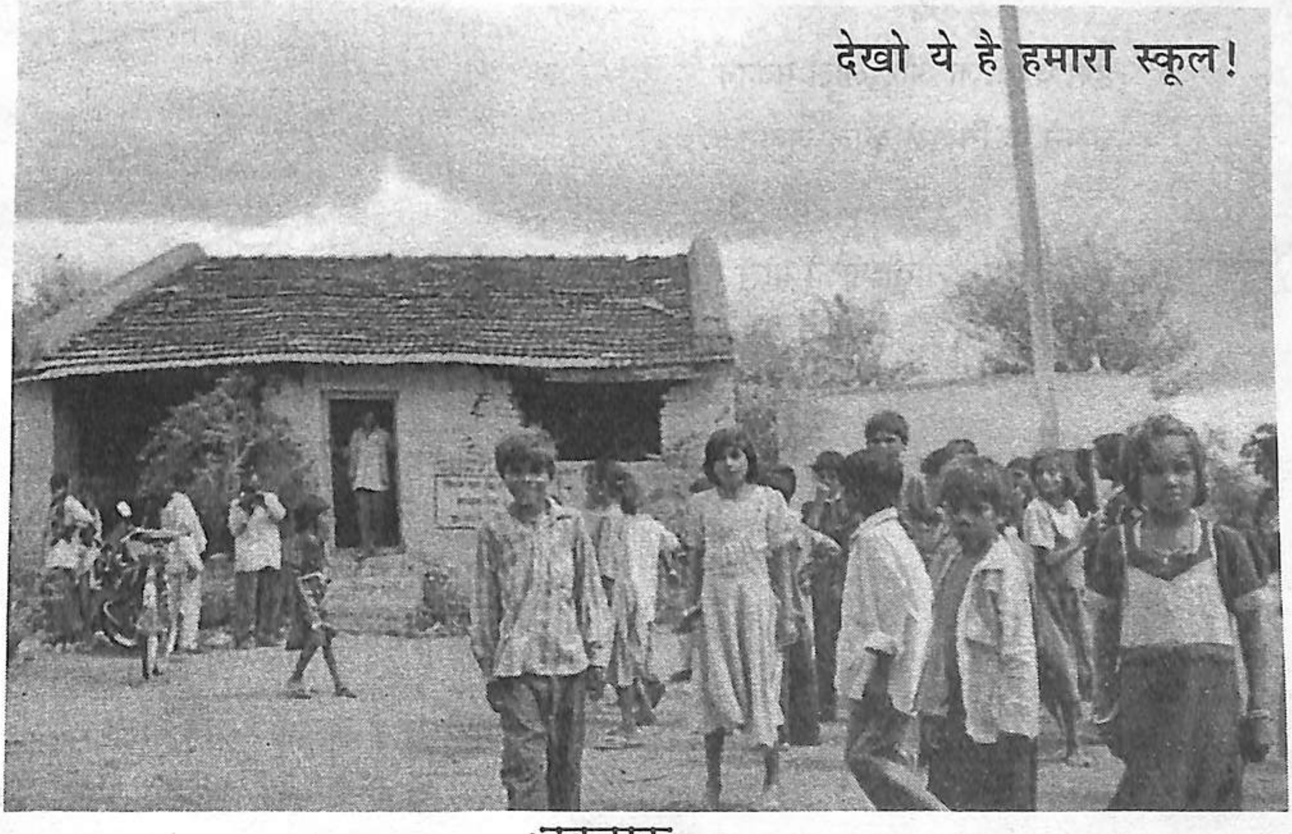
देखो ये है हमारा स्कूल!

मेरा पन्ना

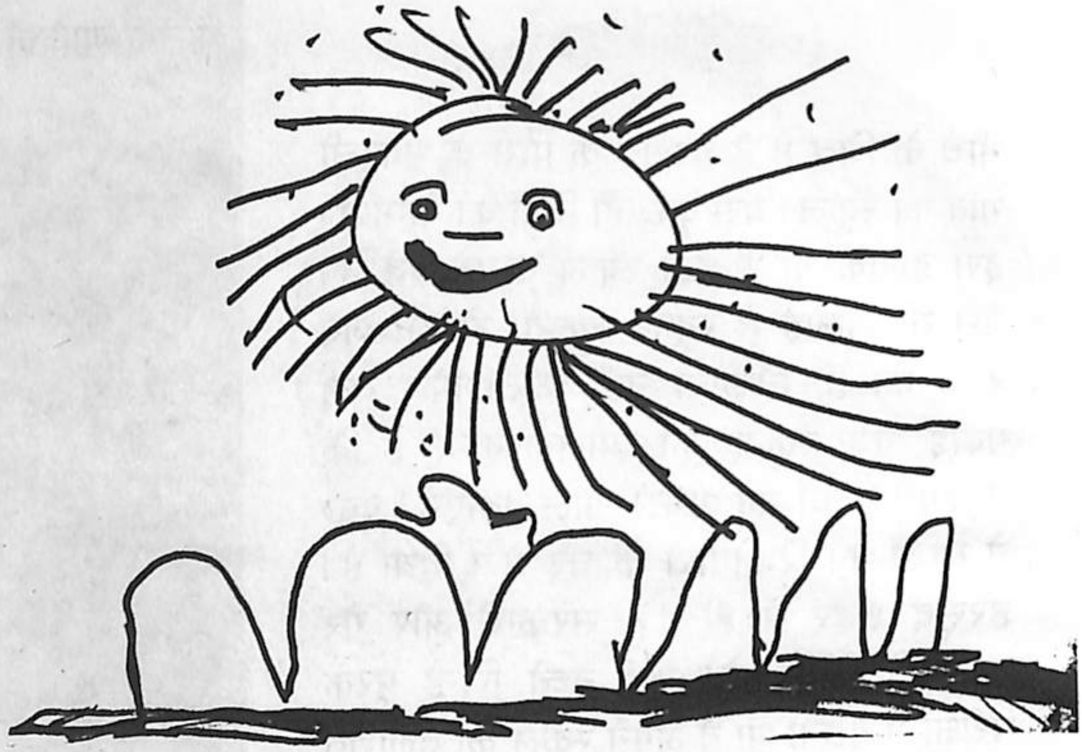

◆ बंटी, हरणगाँव, देवास, म.प्र.

पहेलियाँ

1

एक फूल है काले रंग का सिर पर सदा सुहाए।
तेज़ धूप में खिल-खिल जाए छाया में मुरझाए।

2

हरा दरवाज़ा और लाल मकान
उसमें से निकले काले जवान।

3

मीठी बोली बोलूँ तो सबका प्यार पाऊँ
कड़वा बोलूँ तो सबकी डाँट खाऊँ।

4

लाल हूँ, काली हूँ, नीली हूँ तुम्हें प्यारी हूँ
रखते हो सम्भालकर तुम्हारी मैं दुलारी हूँ।

5

लम्बी-लम्बी हूँ लाल-लाल रंग वाली
सर्दी में घर-घर में हलुआ बनाने वाली।

◆ दीप्ती साहा, आठवीं, उज्जैन, म.प्र.

चूहे की दोस्त बिल्ली

एक घर में एक बिल्ली रहती थी। उसका रंग भूरा था। उसके दो बच्चे भी रहते थे। चूहे को बिल्ली बहुत सताती थी। एक दिन चूहे ने कहा कि बिल्ली तुम मुझे बहुत सताती हो एक दिन मैं भी तुम्हें सताऊँगा।

एक रात में बिल्ली सो रही थी। चूहे ने रात में आकर बिल्ली के बच्चे को रस्सी से बाँध दिया। सुबह उठकर बिल्ली ने देखा कि मेरा एक बच्चा नहीं है।

बिल्ली ने चूहे से कहा कि भैया मेरे बच्चे को छोड़ दो।

चूहे ने कहा कि अब तुम मुझे नहीं सताओगी?

बिल्ली ने कहा कि नहीं सताऊँगी।

चूहे ने बिल्ली के बच्चे को छोड़ दिया। बिल्ली और चूहे दोस्त बन गए।

◆ **रुखसार बानो, छठवीं, मालाखेड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.**

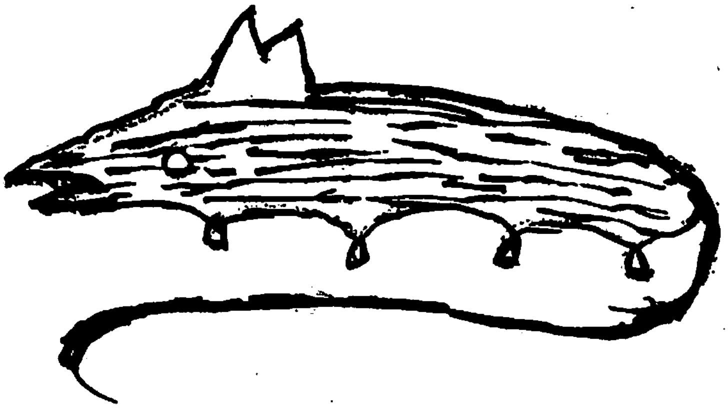

◆ **अशोक मण्डलोई, आठवीं, हरणगाँव, देवास, म.प्र.**

◆ **योगिता, हरदा, म.प्र.**

सहेली को चोट लगी

एक दिन मेरी सहेली वीना दरवाजे पर चढ़ गई। तभी वो दरवाजा बंद कर रही थी। उसकी मम्मी ने कहा बेटी उतर जाओ। वो उतरने लगी तभी उसका हाथ फिसल गया। वो पक्के पर गिरी तो उसका हाथ टूट गया। तो उसे उसकी मम्मी अस्पताल ले गई। फिर उसे पलस्तर चढ़ गया।

◆ **प्रीती सिंह, तीसरी, फ़ैज़ाबाद, उ.प्र.**

बरखा आई

बरखा आई बरखा आई
झिलमिल झिलमिल बूँदें लाई
आसमान में उठे बादल
गड़ गड़ गड़ आवाज़ आई
ताल तलैया लगे छलकने
खेतों में फसलें लहराई
बरखा आई बरखा आई
धरती ने चुनरी ओढ़ी है
बाग-बगीचे महक उठे हैं
किसान के चेहरे पे रौनक आई
बरखा आई बरखा आई।

◆ सोहन वर्मा, पाँचवीं, अजनास,
देवास, म.प्र.

◆ निर्मल बारेला,
काबड़, देवास, म.प्र.

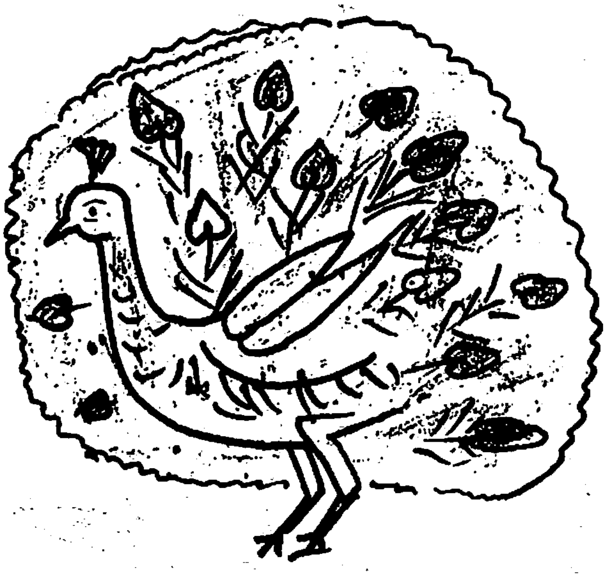

◆ रामनिवास कालेश्वर

कुआँ

हमारे गाँव में एक कुआँ है। वह तीस-पैंतालीस वर्ष पुराना है। यह पत्थरों से बना है। इसको बनाने में एक महीना लगा। यह पटेल का कुआँ है। पटेलों ने झाड़-पेड़ काटकर बगीचे में बनाया है। पहले कुआँ का पानी गाँव में सब लोग पीते थे। अब कुआँ का पानी न तो खेतों में दिया जाता है न इसका पानी पीते हैं। इस बाग में दो तीन जामुन के पेड़ लगे हैं।

◆ संगीता वर्मा, छठवीं, मालाखेड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.

इंडिया गेट

जब मैंने इंडिया गेट देखा तो मुझे बहुत अच्छा लगा। इसके अंदर पीले-पीले बल्ब लगे हैं। इसके अंदर अमर जवान ज्योति है। इसके सामने राष्ट्रपति भवन है। जो जवान शहीद हुए थे इंडिया गेट पर उनके नाम लिखे हैं। यहाँ तीन फौजों का झण्डा है - आर्मी, नेवी और एयर फोर्स।

◆ राहुल कुमार, दूसरी, आरा, भोजपुर, बिहार

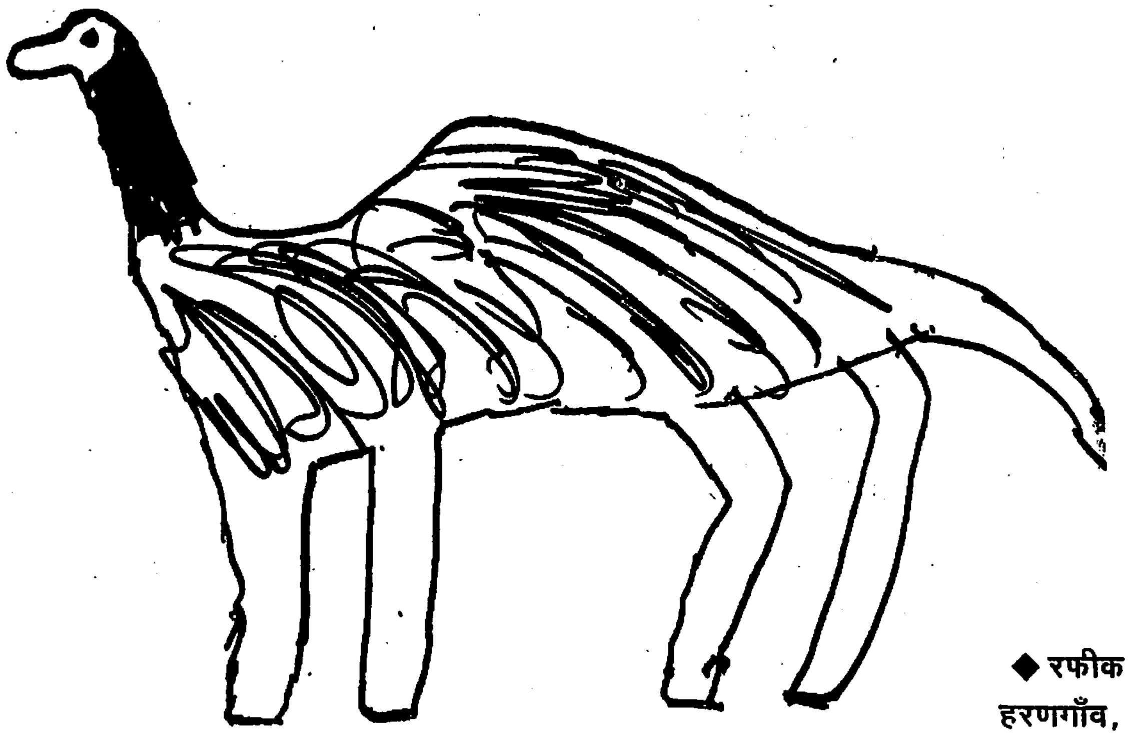

◆ रफीक खान, पाँचवीं, हरणगाँव, देवास, म. प्र.

मेरा पन्ना

मेरा स्कूल

जब मुझे पता चला कि मैं उत्कृष्ट विद्यालय की चयन परीक्षा में पास हो गई हूँ तब मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा था। मुझे ऐसा लगता था कि न जाने वह कैसा विद्यालय होगा, न जाने वहाँ कैसी पढ़ाई होगी। जाने मुझे वहाँ कैसे मित्र मिलेंगे। और सबसे बड़ा दुख तो मुझे अपने पुराने मित्रों को छोड़ने का था।

लेकिन जब मैं इस विद्यालय में आई तब मुझे पता चला कि मेरा सोचना कितना गलत था। यह विद्यालय बहुत अच्छा है। यहाँ बहुत अच्छी पढ़ाई होती है। यहाँ सारे शिक्षक बहुत अच्छे और अनुभवी हैं। वे हमारे साथ शिक्षकों जैसा नहीं बल्कि मित्रों जैसा व्यवहार करते हैं। इस विद्यालय में पढ़कर मैं बहुत खुश हूँ।

◆ आरती विष्ट, दसवीं, देवास, म. प्र.

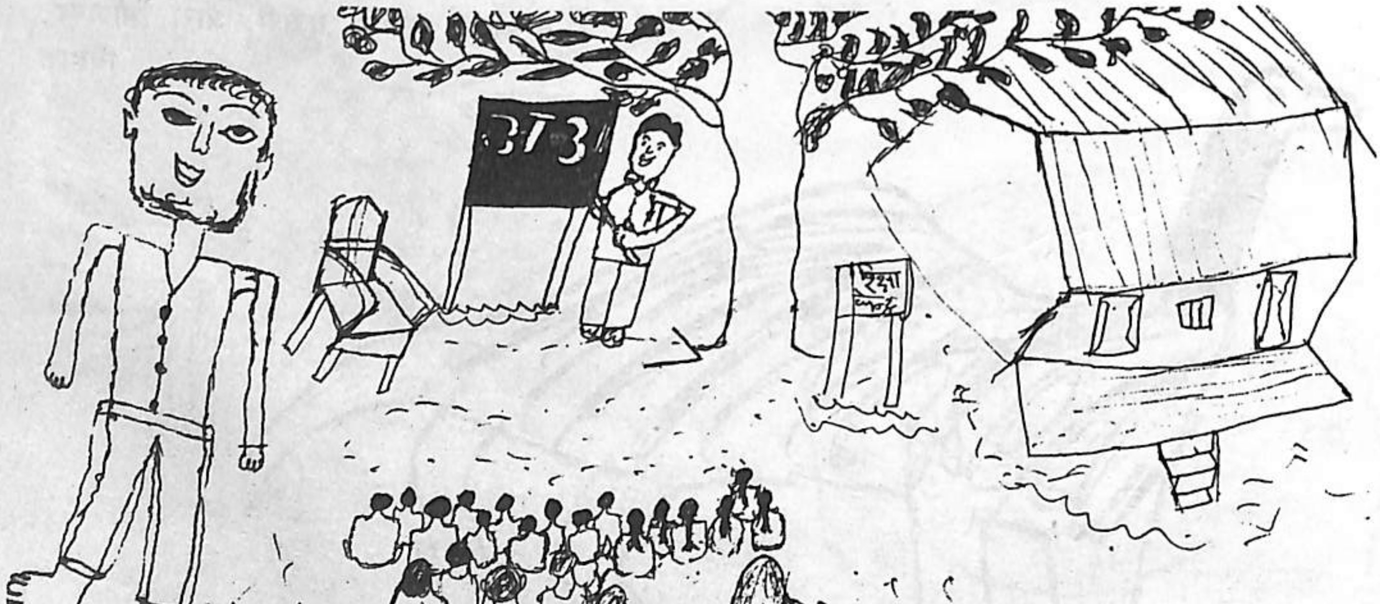

◆ रवीन्द्र कुमार, (गैर स्कूली), काबड़, रतनपुर, देवास, म. प्र.

समर कैम्प

श्रीनारायण विद्या मंदिर में दिनांक 22 जून 2004 में समर कैम्प लगा। जिसका उद्देश्य बच्चों में कला में अपनी रुचि को और आगे बढ़ाने का था। हमारे विद्यालय से लगभग 100 बच्चों में भाग लिया। समर कैम्प में बच्चों को योग, कम्प्यूटर, संगीत, भाषा विकास, क्राफ्ट आदि का अभ्यास कराया गया। कैम्प में बहुत मनोरंजन हुआ। कम्प्यूटर चलाने में बहुत अच्छा लगा। कम्प्यूटर एक ऐसी युक्ति है जिससे हम दुनिया में किसी भी व्यक्ति से बात कर सकते हैं, किसी का भी चित्र बना सकते हैं।

इसके अलावा हमें क्राफ्ट में ओरीगेमी सिखाई गई। इसमें हमने फूल बनाना सीखे। हमने योग भी किया। योग से शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। इन सबके अलावा हमने संगीत का अभ्यास किया जिसमें सात सुरों के बारे में सुना, उन्हें किस प्रकार गाया जाता है इसका ज्ञान हमें हुआ।

इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण विषय हमें सिखाया गया वह है हमारा भाषा विकास। जब हम लिखते हैं तो भाषा में बहुत-सी गलतियाँ होती हैं। भाषा विकास से हमारी भाषा में सुधार हुआ। इस समर कैम्प में हमें बहुत मज़ा आया।

◆ **रश्मि पंचोली, दसवीं, देवास, म.प्र.**

माँ

कैसी होती है यह माँ
कभी तो डाँटे
कभी दिखाए प्यार
कभी तो करती आलस
कभी काम कर-करके थक जाती।
यह माँ क्यों थकती
क्यों करती है आलस
क्यों डाँटती है
पढ़ो-पढ़ो चिल्लाती है
फिर भी कितनी प्यारी है।

◆ **अपाला मिश्र, पाँचवीं,**
देहरादून, उत्तरांचल

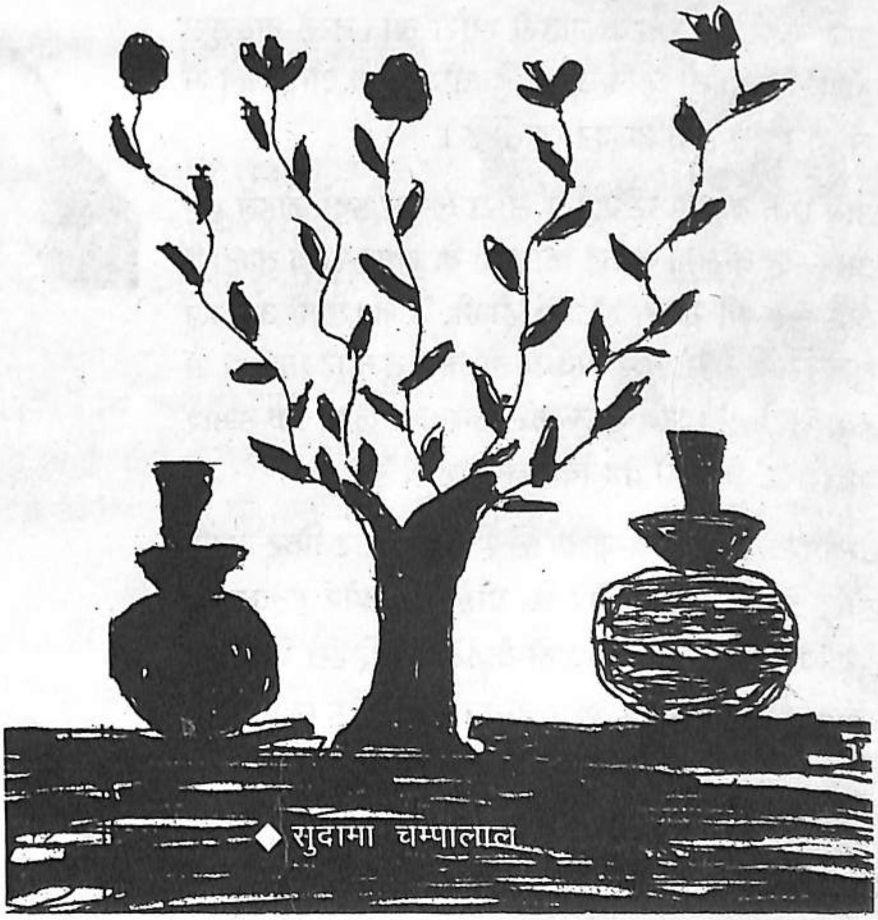
◆ सुदामा चम्पालाल

साँस लेना और बोलना

तुमने कभी हारमोनियम देखा है? उसके पीछे का हिस्सा एक पर्दे की तरह रहता है जिसे आगे-पीछे करके हवा को अन्दर-बाहर किया जाता है। इसे बेलो कहते हैं। हमारे फेफड़े भी दो बेलो की तरह ही हैं - पसलियों से बने पिंजरे के अंदर बसे दो बेलो लगातार साँस के रूप में हवा अन्दर लेते और बाहर निकालते रहते हैं।

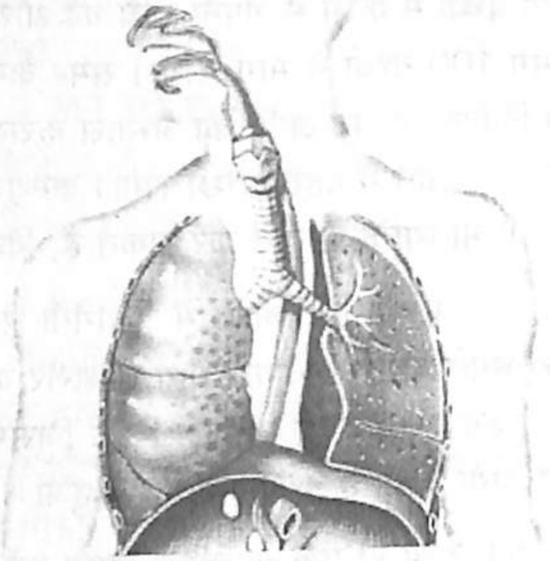

इस बार हम फेफड़ों के अपने काम के बारे में नहीं बल्कि इस बात के बारे में पता करते हैं कि वे हमारे बोलने में कैसे मदद करते हैं। फेफड़े हवा को शरीर के अंदर लाते और बाहर ले जाते हैं। उसी हवा में कंपन से हमारी आवाज़ पैदा होती है। चलो पहले साँस लेने की प्रक्रिया को देख लें। सीधे तनकर खड़े हो जाओ। अब छाती पर हाथ रखकर उँगलियों से अपनी पसलियों को महसूस करो। इसी के अन्दर हैं फेफड़े।

अब मुँह बन्द करके गहरी साँस लो। तम्हें महसूस होगा कि छाती फूल जाती है और नाक और गले में से होते हुए हवा अन्दर जाती है।

अब एक बार फिर गहरी साँस लेकर हवा छोड़ते हुए आ−−ह बोलो। फेफड़े की हवा के साथ-साथ तुम्हारी आ−−ह भी खत्म हो गई होगी, है न। ऐसी आवाज़ तुम सिर्फ तभी कर सकते हो जब तुम्हारे फेफड़ों में हवा भरी हो। अब कुछ-कुछ अन्दाज़ लगा कि हमारे बोलने में फेफड़ों का कितना महत्व है?

चलो एक और प्रयोग करते हैं। इस बार फिर गहरी साँस ले लो। अब सिर के पीछे की ओर हल्का-सा झुकाकर एक हाथ को गले के निचले हिस्से पर रखो - कंठ वाले हिस्से के ठीक नीचे। फिर साँस छोड़ते हुए बोलो - आ−−ह। क्या कुछ महसूस हुआ? गले के इस भाग में हवा एक बहुत बारीक छेद में से गुज़रती है। तुमने कागज़ या पत्तों की बनाई पुंगी ज़रूर

ज़रूर बजाई होगी। या फिर फूले हुए फुग्गे के मुँह में पतला सुराख बनाकर भी बजाया होगा। हमारे गले का निचला भाग भी कुछ इसी तरह के छेद का काम करता है। यहाँ पर एक डिब्बेनुमा आकृति है जिसके अन्दर दो झिल्लियाँ तनी रहती हैं। इनके बीच में एक पतली-सी खाली जगह रहती है। जब तुम बोलते या गाते हो तो हवा झिल्लियों के बीच की इस जगह में से गुज़रती है। इससे झिल्लियों में कम्पन पैदा होता है और आवाज़ निकलती है। झिल्लियों के बीच की जगह जितनी पतली होगी, आवाज़ उतनी ऊँची होगी। और अगर वह चौड़ी रही, तो आवाज़ नीची या धीमी होगी।

यह तो थी आवाज़ पैदा करने की बात। पर बोलने में तो इस आवाज़ को हमें कितने ही स्वरों में बदलना पड़ता है, कितने मोड़ और लोच पैदा करने पड़ते हैं। इसके लिए हम अपने गले के साथ-साथ मुँह, नाक, जीभ और होठों का भी इस्तेमाल करते हैं।

अब तुम एक आइना ले लो और जैसा हम बताते हैं, वैसे ही स्वर बनाते हुए अपने मुँह को देखो। वैसे तो यहाँ चित्र भी दिए हैं, पर तुम्हें अपने मुँह को देखने में ज़्यादा मज़ा आएगा।

पहले बोलो ईईईईईईई। आइने में मुँह को देखने के साथ जीभ कहाँ, किस स्थिति में है, यह भी महसूस करने की कोशिश करो।

अब बोलो ऑ------। बदल गई न होठों की बनावट। और जीभ भी अब मुँह के कुछ और अन्दर की तरफ है।

अब पहले की तरह ही फिर आ-------ह बोलो। देखो, कितना खुल गया तुम्हारा मुँह। जीभ भी अब पहले की तुलना में काफी आराम से है, तनी हुई नहीं। तीनों आवाज़ें एक के बाद एक दोहराकर देखो। फर्क आसानी से पता चल जाएगा।

अब मुँह बन्द करके मम्म्---- बोलो। होंठ फिर बन्द हो गए, मुँह एक खास आकार में आ गया और आवाज़ आई कहाँ से? नाक से, और क्या। पर आवाज़ को यह खास स्वर देने के लिए मुँह का यह आकार लेना ज़रूरी था।

अब आखिरी खेल। बोलो सस्स्----, या फिर ज़ज़्ज़्----। फिर खुल गए होंठ। और शश्श्---- बोलने में? क्या कोई फर्क आया मुँह की बनावट या जीभ की स्थिति में? इन आखिरी तीन स्वरों का हमारे गले से कोई लेना-देना नहीं है। ये तो मुँह से हवा निकालने के अलग-अलग तरीकों के कारण पैदा होते हैं। हाँ, फेफड़े का कमाल तो यहाँ भी है।

क्यों ?

लिली के पापा उसकी एक हरकत से बहुत परेशान रहते।

दरअसल वो हरकत की जाने वाली नहीं बल्कि बोली जाने वाली थी।

पापा कहते,"रात हो गई है अब कपड़े बदलो," तो वह कहती "क्यों?"

अगर बोलो कि नाश्ते के लिए कुछ देर इंतज़ार करना पड़ेगा अभी अण्डा बनने में देर है, तो वह कहती "क्यों?"

बोलो कि धूप में न खेलो, तो झट कहती "क्यों?"

वैसे लिली के पापा की उसके हर सवाल का जवाब देने की पूरी कोशिश रहती।

जैसे..."लिली, घास पर मत बैठो।" "क्यों?"

"बेटा कपड़े गीले हो जाएँगे"। "क्यों?"

"कल रात बारिश जो हुई थी"। "क्यों?"

"क्योंकि काले बादल पानी लाए थे।" "क्यों?"

"बस लाए थे, बेटा प्लीज़ मुझे बख्शो!"

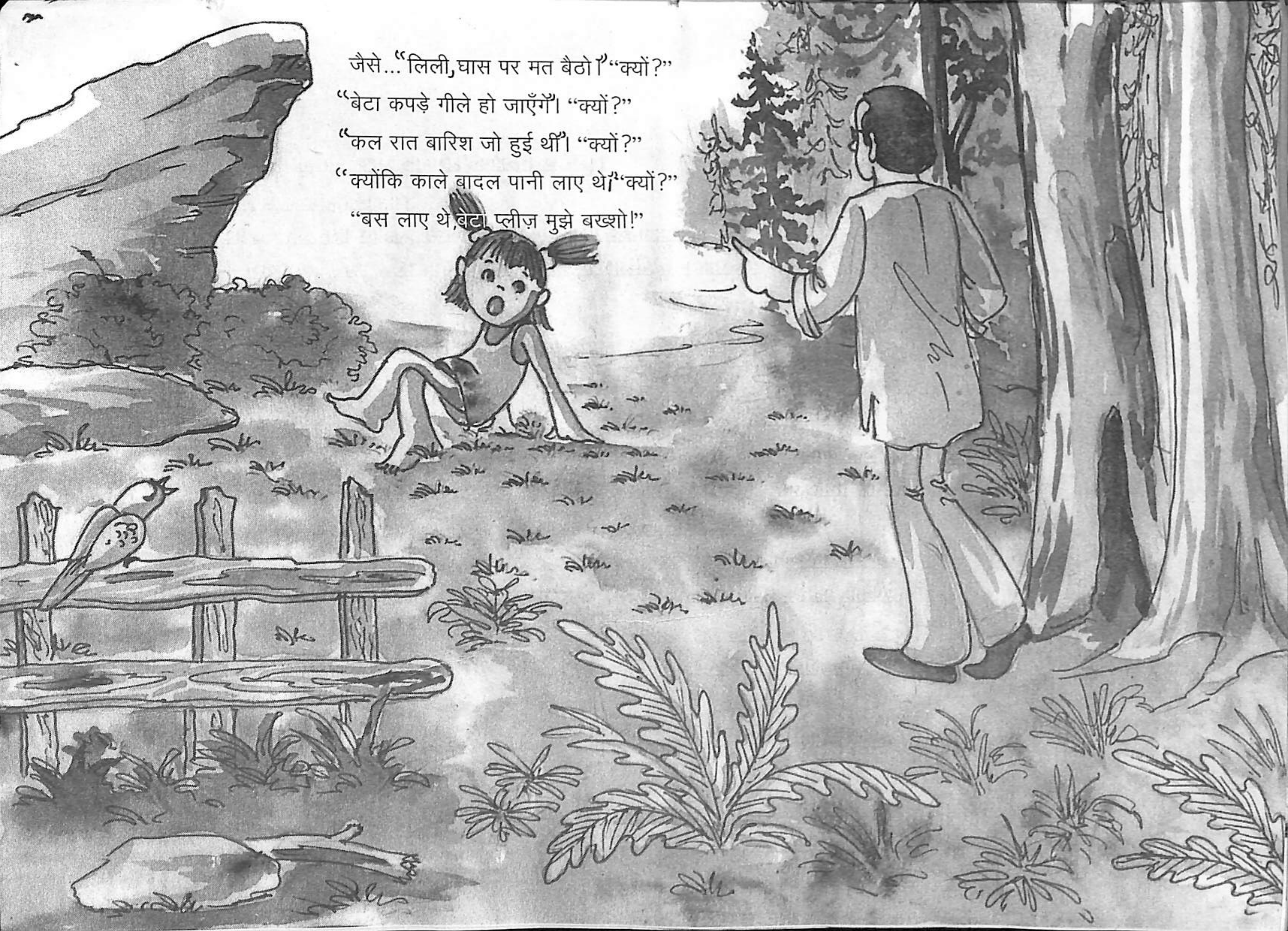

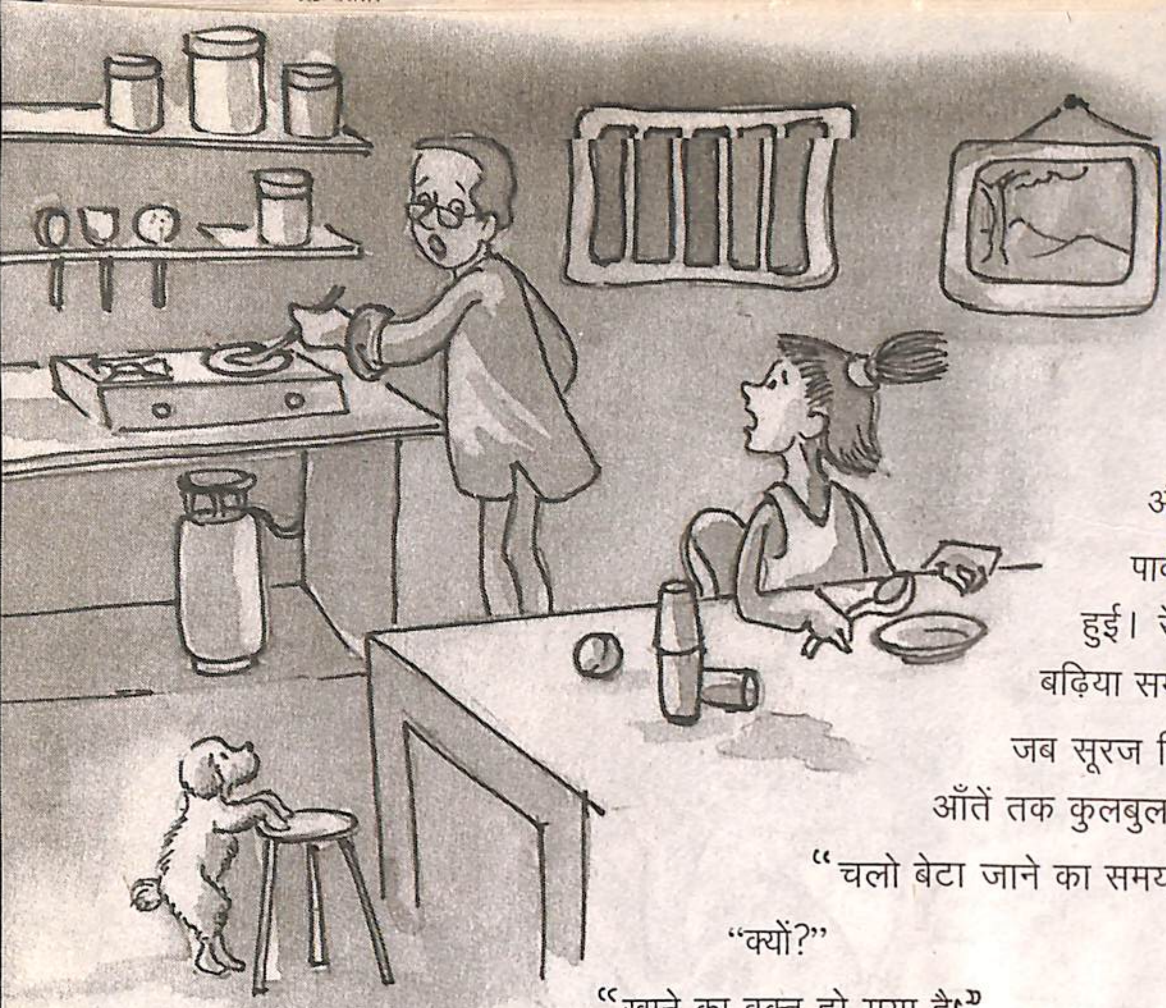

"आज मौसम अच्छा है और मेरी छुट्टी भी है। चलो लिली तुम, मैं और जादू (कुत्ता) पार्क चलते हैं।"

"बिलकुल..हुर्रा।" लिली झटपट खुद तैयार हुई, जादू के भी बाल सीधे किए और बरामदे में जा खड़ी हुई।

पार्क में दो तीन घण्टे जमकर मस्ती हुई। रेत, पानी, झूले सभी के साथ बढ़िया समय बीता।

जब सूरज सिर पर चढ़ आया और भूख से आँतें तक कुलबुलाने लगीं तो पापा बोले,

"चलो बेटा जाने का समय हो गया।"

"क्यों?"

"खाने का वक्त हो गया है।"

"क्य......"

अभी लिली का "क्यों" पूरा भी नहीं निकला था कि आसमान में ज़ोर की गड़गड़ाहट सुनाई दी। एक बड़ा-सा अजीब-से आकार प्रकार वाला उड़नखटोला तेज़ आवाज़ करता धीरे धीरे उतर रहा था।

भगदड़ मच गई। सभी की निगाहें ऊपर थीं। डर, आश्चर्य से भरीं।

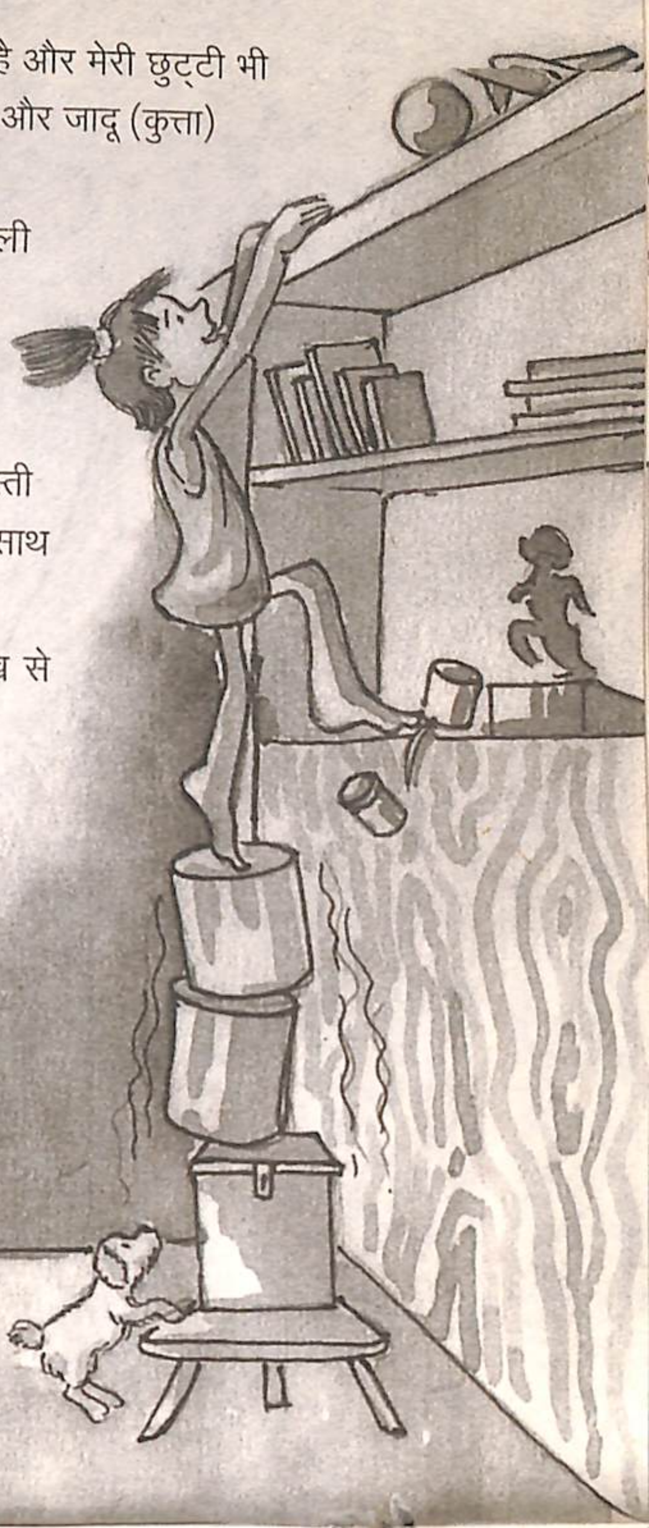

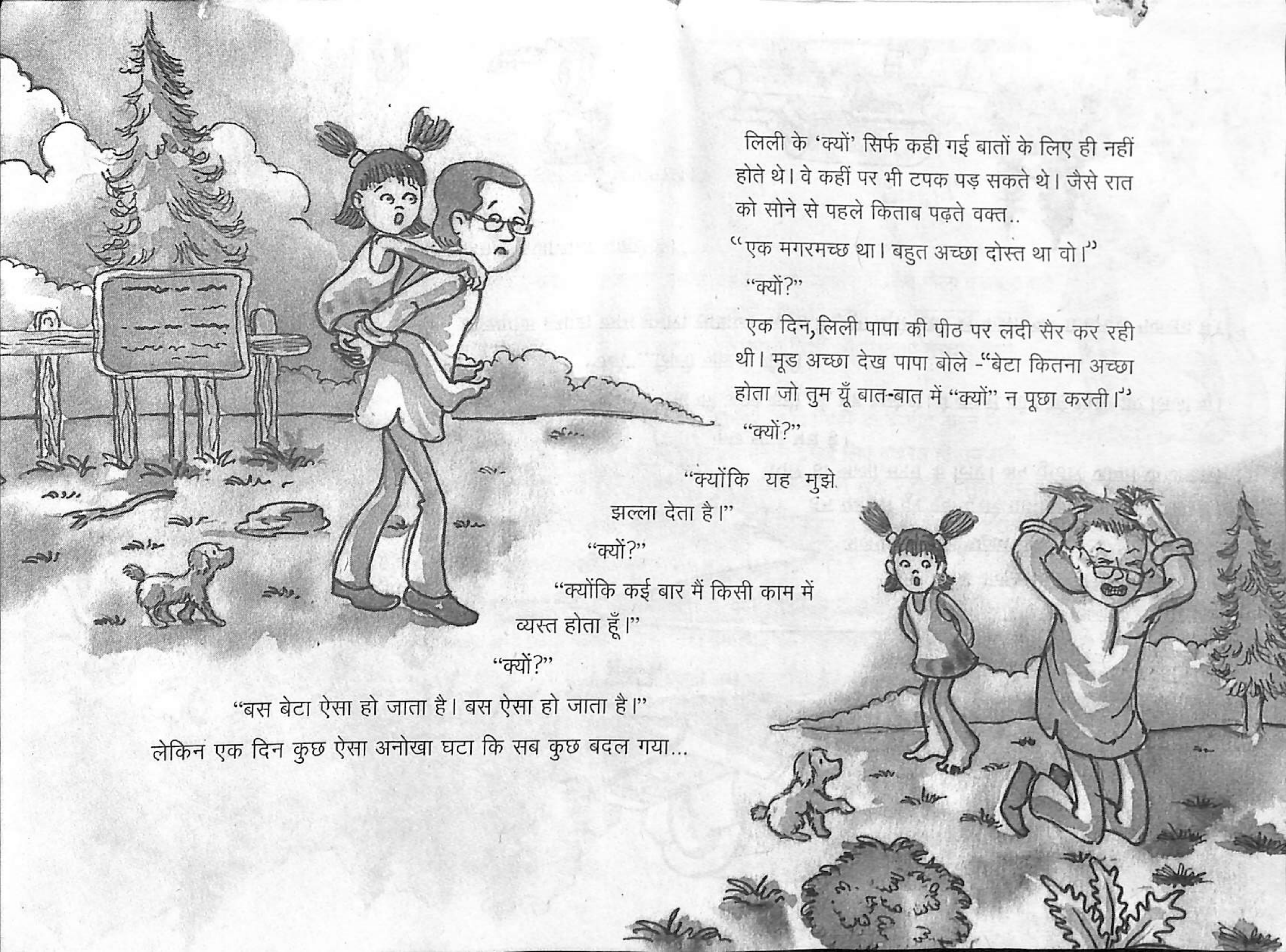

लिली के 'क्यों' सिर्फ कही गई बातों के लिए ही नहीं होते थे। वे कहीं पर भी टपक पड़ सकते थे। जैसे रात को सोने से पहले किताब पढ़ते वक्त..

"एक मगरमच्छ था। बहुत अच्छा दोस्त था वो।"

"क्यों?"

एक दिन, लिली पापा की पीठ पर लदी सैर कर रही थी। मूड अच्छा देख पापा बोले -"बेटा कितना अच्छा होता जो तुम यूँ बात-बात में "क्यों" न पूछा करती।"

"क्यों?"

"क्योंकि यह मुझे झल्ला देता है।"

"क्यों?"

"क्योंकि कई बार मैं किसी काम में व्यस्त होता हूँ।"

"क्यों?"

"बस बेटा ऐसा हो जाता है। बस ऐसा हो जाता है।"

लेकिन एक दिन कुछ ऐसा अनोखा घटा कि सब कुछ बदल गया...

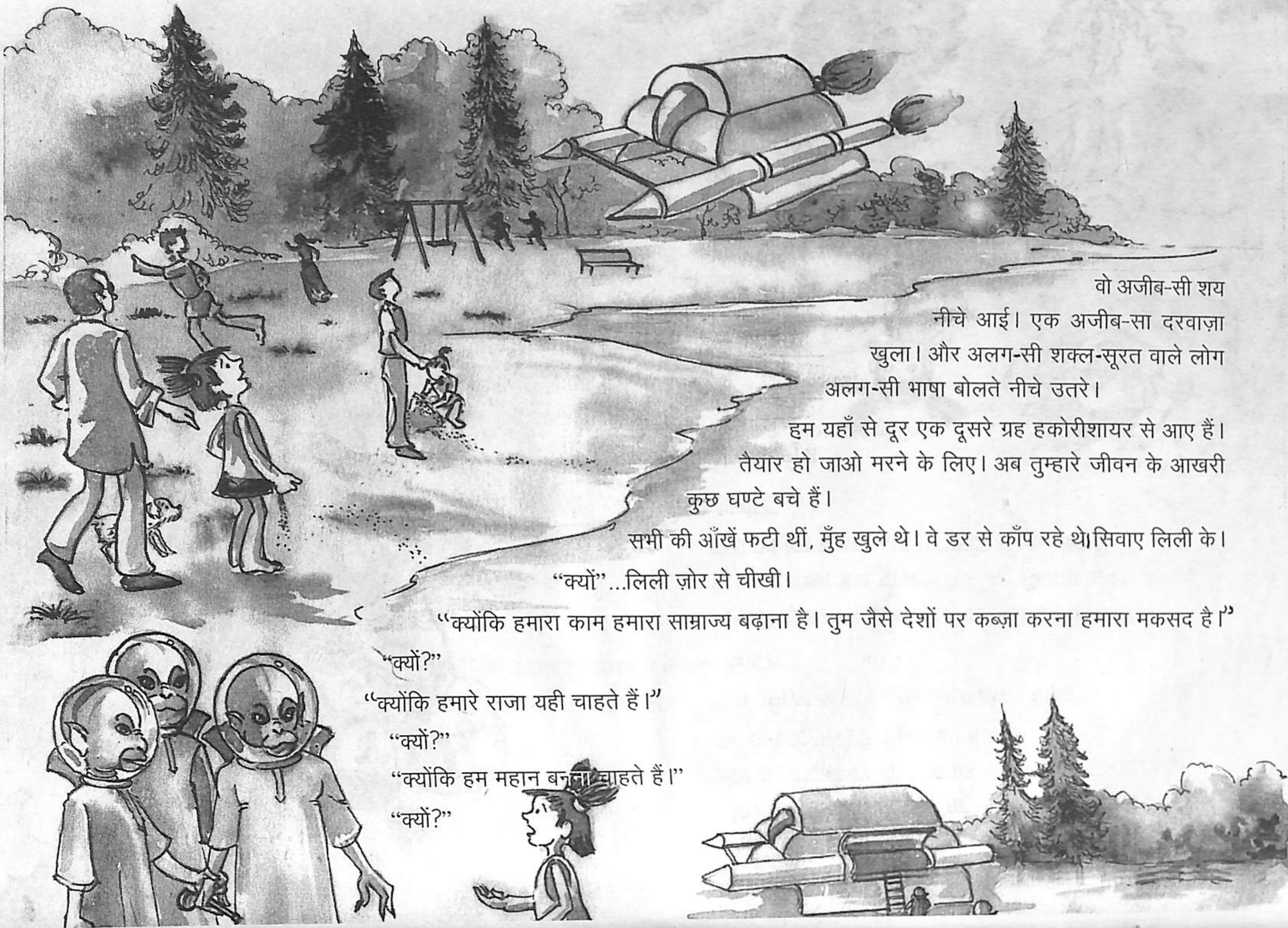

वो अजीब-सी शय नीचे आई। एक अजीब-सा दरवाज़ा खुला। और अलग-सी शक्ल-सूरत वाले लोग अलग-सी भाषा बोलते नीचे उतरे।

हम यहाँ से दूर एक दूसरे ग्रह हकोरीशायर से आए हैं। तैयार हो जाओ मरने के लिए। अब तुम्हारे जीवन के आखरी कुछ घण्टे बचे हैं।

सभी की आँखें फटी थीं, मुँह खुले थे। वे डर से काँप रहे थे। सिवाए लिली के।

"क्यों"...लिली ज़ोर से चीखी।

"क्योंकि हमारा काम हमारा साम्राज्य बढ़ाना है। तुम जैसे देशों पर कब्ज़ा करना हमारा मकसद है।"

"क्यों?"

"क्योंकि हमारे राजा यही चाहते हैं।"

"क्यों?"

"क्योंकि हम महान बनना चाहते हैं।"

"क्यों?"

"ऐ लड़की बकर-बकर मत कर।" इतना कहकर हकोरीशायर के लोग गोला बनाकर बातें करने लगे। कभी जोश में चीखते, कभी कुछ सोचते, कभी सिर खुजलाते, कभी असमंजस में दिखते। अंत में कुछ सहमति सी बनती दिखी और उनका सरदार आगे आया।

"ऐ लड़की तेरे सवालों ने हमें सोचने पर मजबूर किया। ग्रहों को बरबाद करने से हमारा कुछ भला नहीं होता है। इससे लोगों के मन में हमारे लिए नफरत ही उपजती है। इसलिए अब हम जा रहे हैं। हम इस पर विचार करेंगे। खुश रहो तुम सब, हम तो चले।"

"क्य......" लिली का 'क्यों' मुँह में ही अटक गया। पापा ने झट-से मुँह का दरवाज़ा बन्द कर दिया था। सभी ने चैन की साँस ली। और अपने-अपने घर लौट गए।

रात में कहानी सुनाने के बाद पापा ने लिली को ढेर सा प्यार, दुलार किया। रोज़ से कुछ ज़्यादा। फिर उससे वादा किया कि अब वे उसपर कभी नहीं झल्लाएँगे। चाहे वह कितनी बार ही "क्यों" न पूछे।

चादर उढ़ाते हुए पापा बोले, "बेटा मुझे तुम पर नाज़ है। बहुत नाज़ है।"

"क्यों?"

पापा कुछ देर उसे निहारते रहे, "बस यूँ ही बेटा..बस यूँ ही।"

साभार : 'क्यों' से, लेखक - लिण्डसे कैम्प, चित्रकार - टोनी रॉस, प्रकाशक - एण्डरसन प्रेस, लंदन
अंग्रेज़ी से अनुवाद - शशि सबलोक

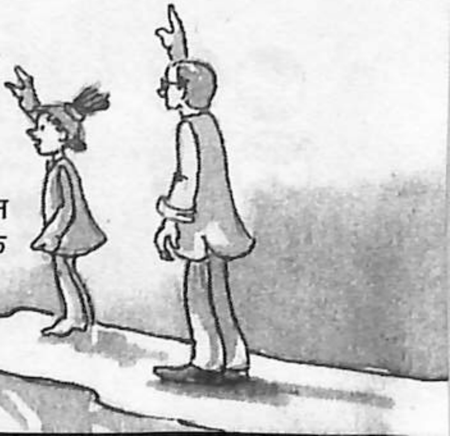

माथापच्ची

1.

कितनी चीज़ें हैं इस बक्से में? हाँ तीन ऐसी चीज़ें भी हैं जो इस बक्से में एक बार ही आई हैं। क्या तुम उन्हें ढूँढ़ सकते हो?

2.

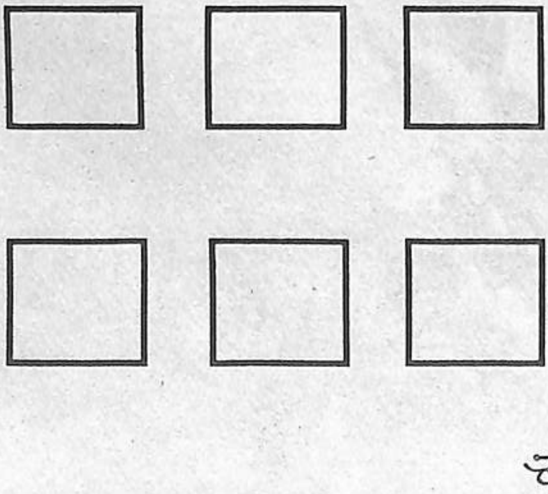

ये रहे छह घर ! एक पुलिस इंसपेक्टर को इनमें से हरेक घर के चारों तरफ फेरा लगाना है। ऐसे उन्होंने कुछ दिन चक्कर लगाए। फिर एक दिन वे सोच रहे थे कि किस रास्ते से जाएँ कि सभी छह घरों का फेरा भी लगा लें और रास्ता भी सबसे छोटा हो। उन्हें एक रास्ता मिला! क्या तुम बता सकते हो कौन सा?।

3.

पाँच गोलियों को यहाँ नौ तरीकों से जमाया गया है। क्या कोई और तरीके से भी इन्हें जमा सकते हैं? अच्छा, अगर चार गोलियाँ होतीं तो कितने तरीके से जमा पाते? सिक्के, कंकड़ या कंचे से करके देखो!

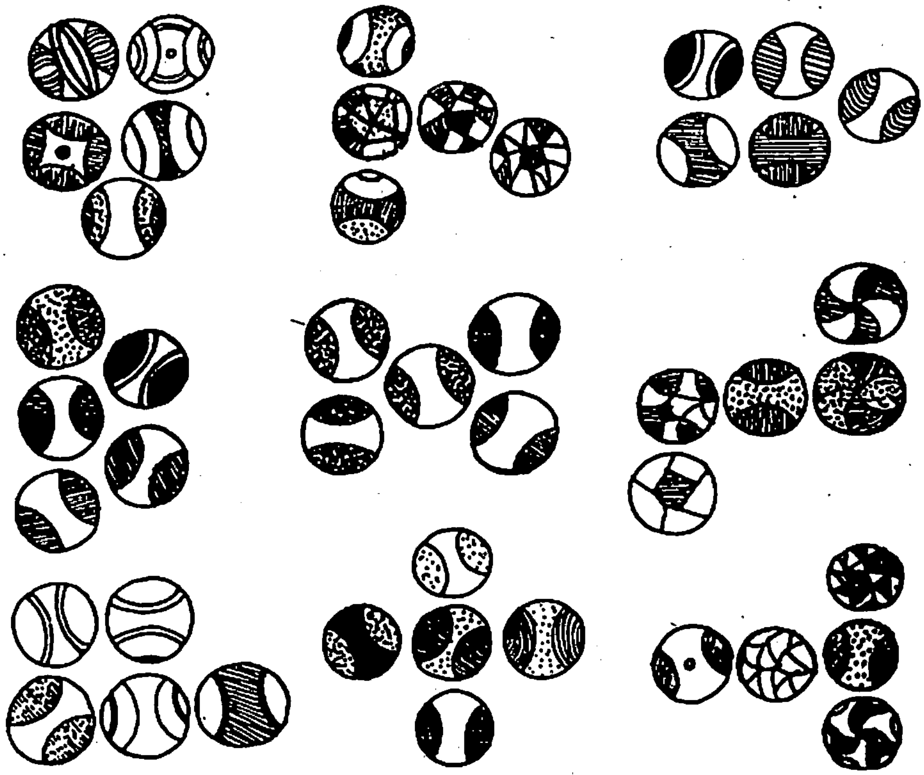

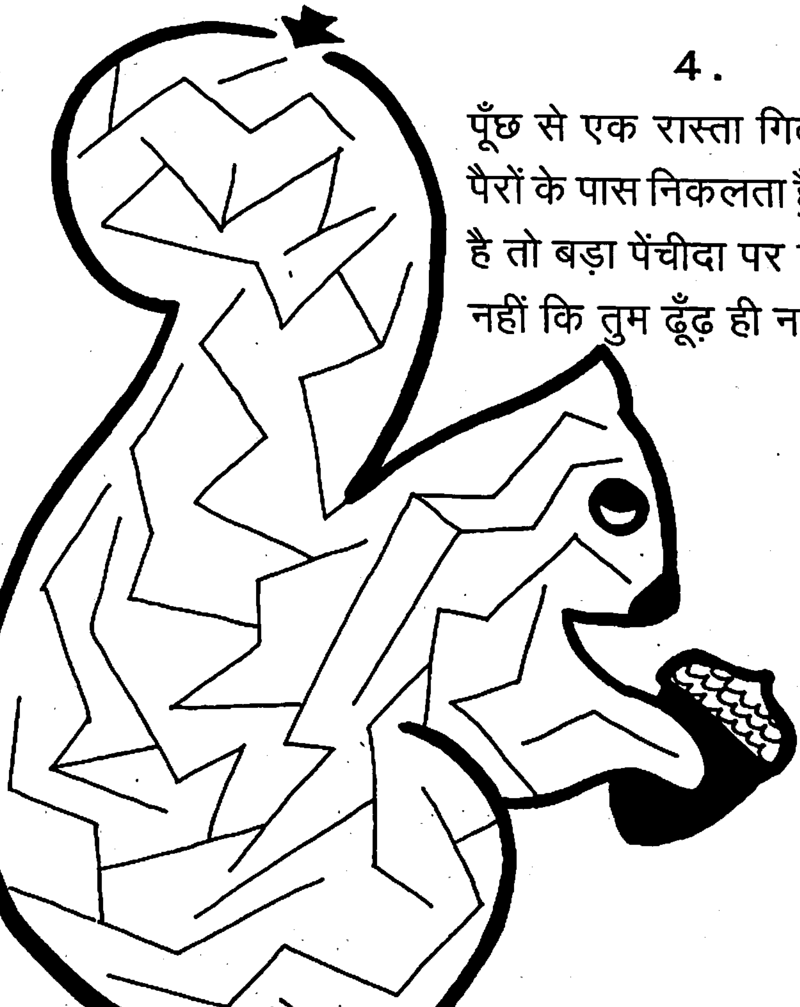

4.

पूँछ से एक रास्ता गिलहरी के पैरों के पास निकलता है। रास्ता है तो बड़ा पेंचीदा पर इतना भी नहीं कि तुम ढूँढ़ ही नहीं पाओ!

5.

क्या ये तीर सीधा है? क्या तुमने स्केल से जाँचा?

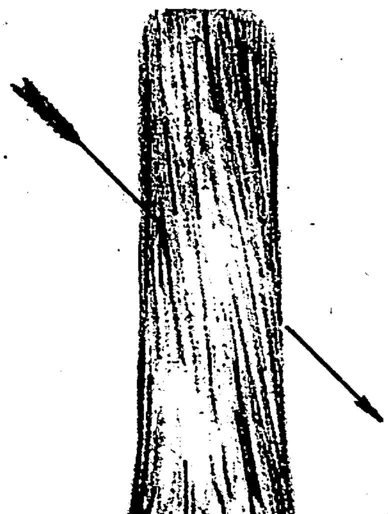

चकमक चर्चा

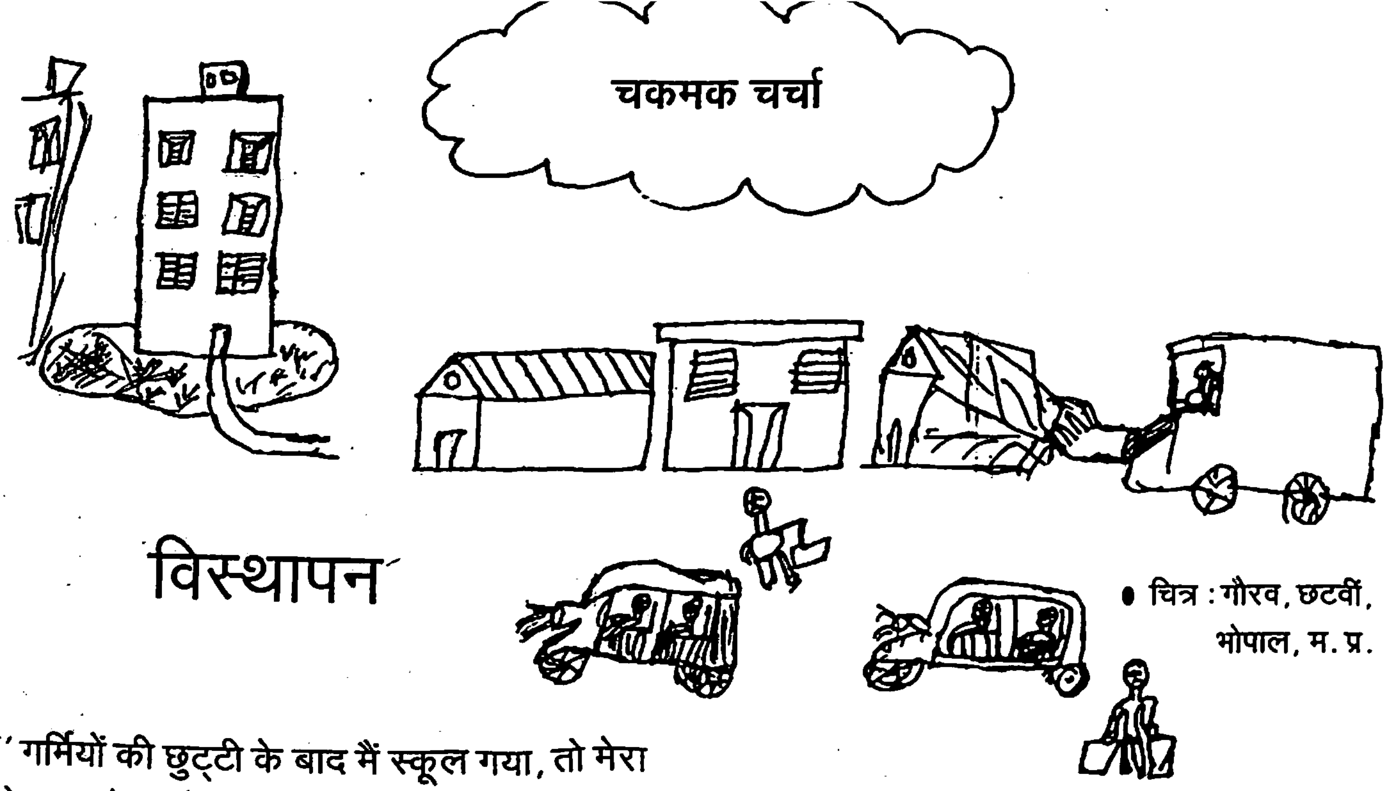

विस्थापन

● चित्र : गौरव, छटवीं, भोपाल, म. प्र.

''गर्मियों की छुट्टी के बाद मैं स्कूल गया, तो मेरा दोस्त मुझे वहाँ नहीं मिला। मुझे पता चला कि उसकी बस्ती को शहर से बाहर बसा दिया गया है। मुझे दुख हुआ। दुख इस बात का कि मैं उसके दुख में शामिल नहीं हो सका। क्या मैं कभी उसके साथ खेल पाऊँगा! पढ़ पाऊँगा!'' यह कहने वाले नरेन्द्र भोपाल के राजा भोज स्कूल में आठवीं के छात्र हैं।

अगर तुम शहरी हो तो एकाध बार तो तुमने भी शहर से बस्तियों को हटते देखा होगा। बस्तियाँ हटाने के तर्क वही होते हैं ...शहर को सुंदर बनाना है! उसे व्यवस्थित करना है! .... इन बस्तियों में रहने वालों का जीवन अधिकतर शहर के दूसरे लोगों की सेवा से चलता है। इससे उनकी आय का अंदाज़ा तुम लगा ही सकते हो। इतनी कम आय में एक नई जगह जाना, वहाँ घर बनाना कितना मुश्किल होता होगा। यहाँ के कई लोगों को नए काम ढूँढने पड़ते होंगे। बच्चों को स्कूल के लिए दूर जाना पड़ता ही होगा। कई बच्चों को स्कूल भी छोड़ देना पड़ता होगा। बिना किसी नौकरी के विकल्प के किसी ऐसी जगह बसा दिया जाता है, जहाँ सड़क, स्कूल, बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएँ तक नहीं होती हैं। नए घर का भी क्या भरोसा ! कब शहर फिर उनकी बस्ती तक पहुँचे। और फिर से ये बस्तियाँ उसकी सुंदरता के रास्ते में आ जाएँ।

बाँधों के कारण भी कई इलाके डूबते रहे हैं। वहाँ भी लोग मुश्किलों से जूझते रहे हैं। यह सब तरक्की के नाम पर होता आया है। कितने सवाल मन में आते हैं। तरक्की तो किसकी तरक्की? और किस कीमत पर? तरक्की के लिए क्या कभी किसी अमीर बस्ती को उजड़ना पड़ा है? जिन लोगों के घर उजाड़े जा रहे हैं उन्हें इस तरक्की का क्या फायदा मिलेगा?

अकसर लोगों के विरोध को कुचलने के लिए पुलिस का हुजूम तैनात कर दिया जाता है। यानी कुछ भी हो बस चुप बैठो। इसी उजाड़ते जाने की कहानी में एक और कड़ी जुड़ जाएगी। हरसूद का बड़ा इलाका इस बारिश डूब जाएगा। शायद तुमने इसके बारे में पढ़ा-सुना हो। इस बार की चकमक चर्चा इसी मसले पर है। चर्चा में भोपाल के राजा भोज स्कूल और हरसूद के कई बच्चे शामिल हुए, इनमें से कुछ तो इस त्रासदी को झेल रहे हैं। तुम्हें क्या लगता है हमें पत्र द्वारा बताना।

● मनोज निगम

सरकार जब घर तोड़ने को कहती है तो वह कहती है कि तुम्हें दूसरी जगह मिलेगी। कोई कहता है कि नहीं निकलेंगे। तो पुलिस ज़बर्दस्ती निकाल देती है। इसके बाद कोई भी गाँव या शहर में भेज देती है। यहाँ कोई भी सुविधा नहीं होती है जैसे पानी, बिजली, सड़कें।

● गायत्री पाल, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

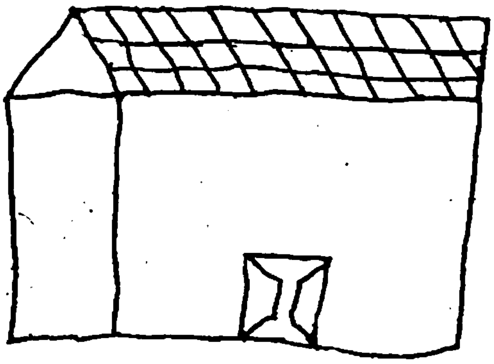

● चित्र: शिव कुमार ठाकुर, भोपाल, म.प्र.

मेरी सहेली बाँसखेड़ी में रहती थी। उसे भी झुग्गी छोड़ के जाना पड़ा। वह लोग बहुत गरीब थे। उसके पापा नहीं थे। वह ग्यारह सौ क्वार्टर में काम करने जाती थी। और खाना बनाती थी। वहाँ उसके साथ स्कूल आने के लिए कोई नहीं है। इस कारण उसे वहीं एक प्राइवेट स्कूल में एडमीशन लेना पड़ा। सभी लोगों के काम धंधे यहीं पर थे। बिचारों को इतनी दूर से काम पर आना पड़ता है।

● शर्मिला साहू, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

मेरी दोस्त बाँसखेड़ी में रहती है। मैंने पूछा तुम इतनी उदास क्यों हो! उसने मुझे बताया कि अब मैं ज़्यादा दिन तुम्हारे साथ नहीं पढ़ पाऊँगी। उसने बताया कि अब वो बाँसखेड़ी में नहीं ललिता नगर में रहेगी। क्योंकि उसकी झुग्गी टूटने वाली है। ललिता नगर में हमें कोई नहीं जानता। ललिता नगर गाँव में लोग दर-दर भटक रहे हैं। वैसे ही उसके मामा को काम नहीं मिल रहा था। अब तो झुग्गी भी टूट गई।

● वंदना वर्मा, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

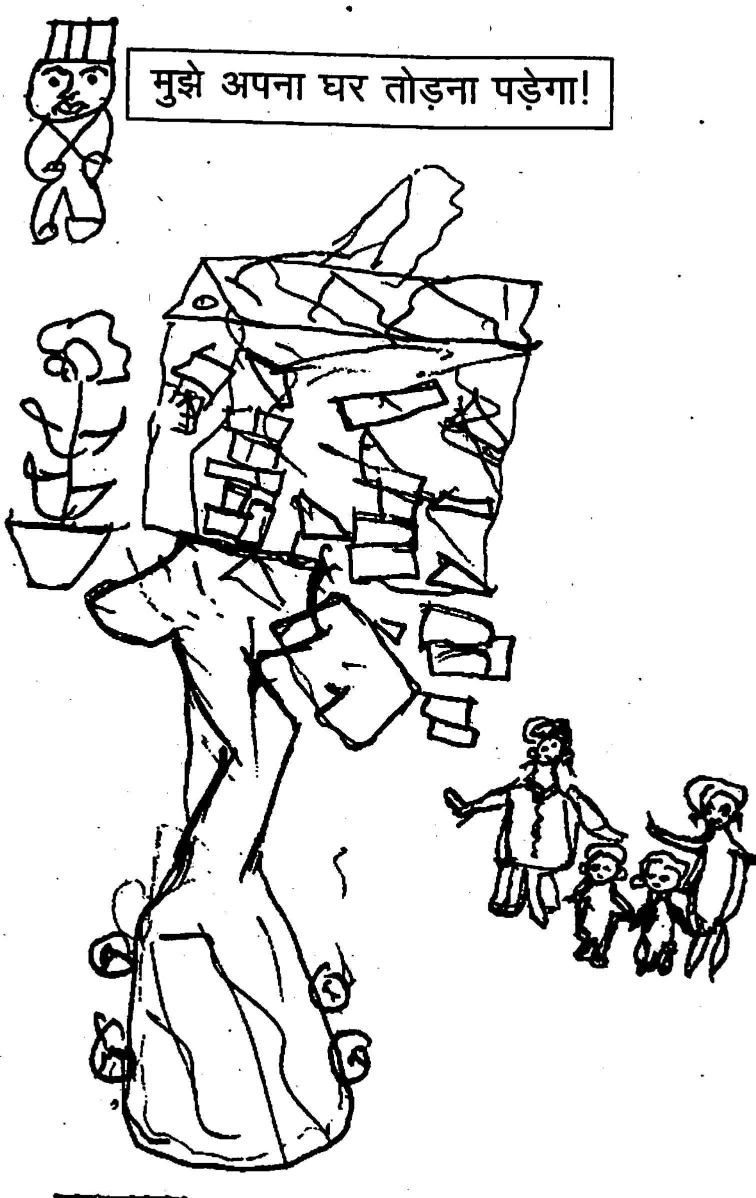

● चित्र : प्रदीप कुमार साहू, छठवीं, भोपाल, म.प्र.

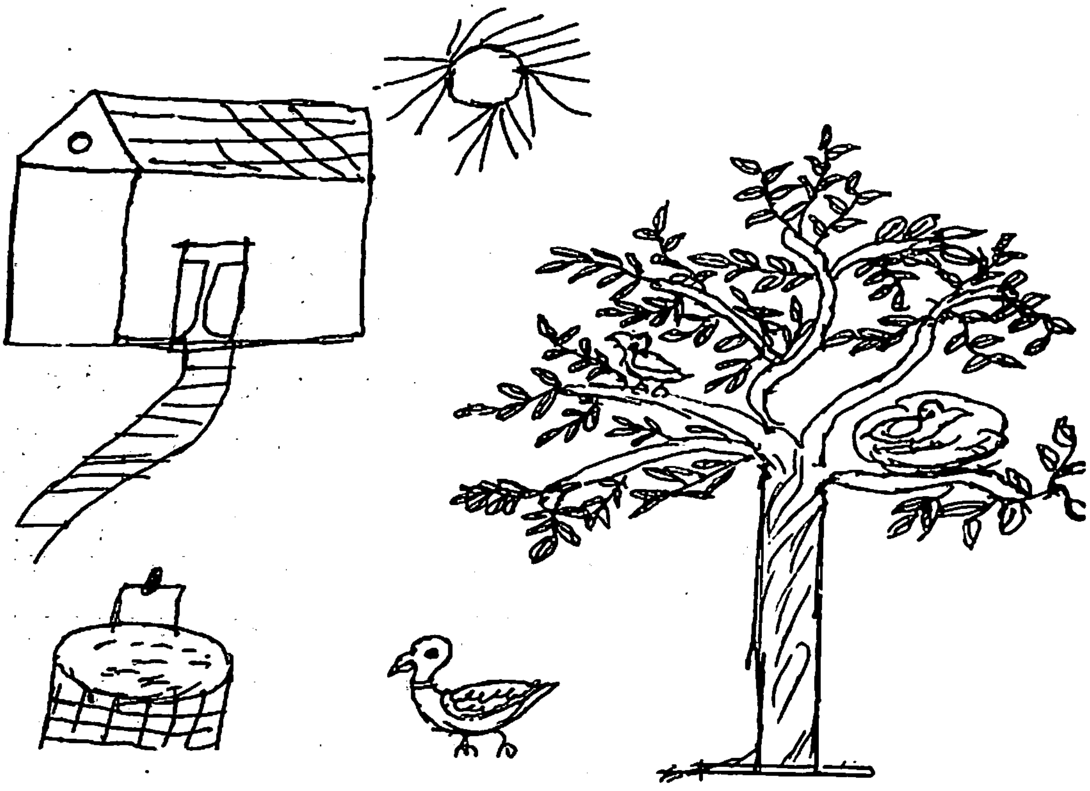

● चित्र : संतोष कौसर, छटवीं, भोपाल, म.प्र.

हमारा घर बहुत सुन्दर था। वह बहुत याद आता है। हमें स्कूल की भी बहुत याद आती है। स्कूल में बहुत अच्छा लगता था। हमारा स्कूल टूट जाने से हम पढ़ाई नहीं कर पाएँगे। हमारे दोस्त भी नहीं मिल पाएँगे। हरसूद के सभी लोगों की याद आती है। जब हमारा घर टूट रहा था तो हमें बहुत बुरा लगा। हमें रोना आता है। छनेरा में अच्छा नहीं लगता है। बिजली भी नहीं है। हमारे पापा का काम भी छूट गया है। हम बेरोज़गार घर के हो गए हैं।

● आकाश विश्वकर्मा, पाँचवीं, हरसूद छनेरा, खण्डवा, म.प्र.

मेरा शहर हरसूद डूब गया है। सहेली बिछड़ गई। हमारे टीचर हमारे से बिछड़ गए। हमको यहाँ नए सोनपुरा में बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है।

● वैशाली माली, सातवीं, सोनपुरा, खण्डवा, म. प्र.

मेरा गाँव डूब गया। गाँव में हमारी खेती डूब गई। हमारा सब कुछ डूब गया। अब हमें दूसरे गाँव में प्लाट दिए गए हैं और हमसे बीस हज़ार रुपए लिए हैं। अब हमने यहाँ मकान बना लिया है। अब दूसरे गाँव छनेरा में पढ़ने जाएँगे।

● पवन मौर्य, नौवीं, रेवापुरा मन्दिर, छनेरा, खण्डवा, म.प्र.

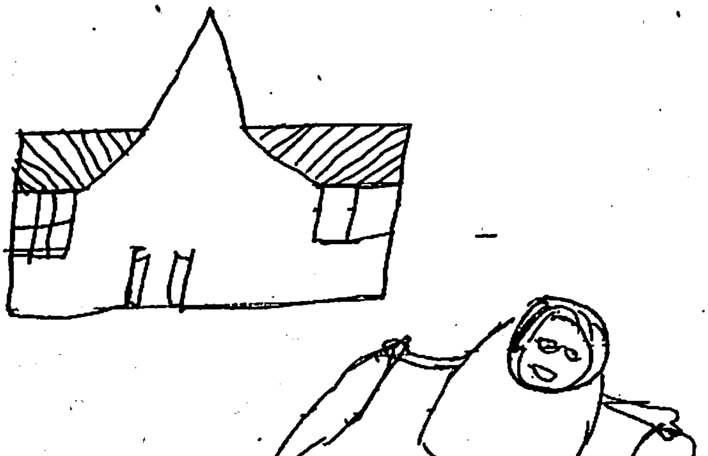

● चित्र : बाला प्रसाद, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

हम हरसूद में किसनपुरा में बहुत साल से रहते थे। हमें नए हरसूद में पढ़ना है। हमें बुरा लगता है क्योंकि हमारे आसपास कोई नहीं है। हम पहले हमारी सहेली के घर जाते थे। अब हम कहीं नहीं जाते। मेरे पापा सुतारी का काम करते हैं।

● पूजा विश्वकर्मा, आठवीं, नया हरसूद, म.प्र.

हमारा जो घर बना था क्या पता ऐसा घर बन पाए या नहीं। जो हमारे दोस्त थे वो मिल पाएँ या नहीं।

● रणजीत वर्मा, सातवीं, गाँव नया सोनपुरा, म.प्र.

मेरे पिताजी लोहारी करते हैं। वे मुझे बहुत पढ़ाना चाहते हैं। पर हमें अब बुरा लगता है। हमारी पुरानी शाला बहुत अच्छी थी। बहुत सी चीज़ें थीं जिनसे हम खेलते थे। वहाँ बहुत से पेड़ पौधे लगे थे। सब डूब जाने से हमें बहुत बुरा लगता है। हम पढ़ना चाहते हैं। हमें अच्छी शाला चाहिए।

● आरती विश्वकर्मा, सातवीं, नया हरसूद, खण्डवा, म.प्र.

● चित्र : पल्लव, आठवीं, भोपाल, म.प्र.

मकड़ी और मक्खी

मकड़ी एक कहीं बैठी थी
अपना जाला ताने,
मक्खी उड़कर एक उसी के
लगी पास से जाने।

मकड़ी बोली, मक्खी रानी
आओ तुम मेरे घर,
तुमने कोई और कहीं घर
देखा इतना सुन्दर?

मक्खी कहने लगी, तुम्हारा
घर सचमुच सुन्दर है,
पर उसके अन्दर आने में
लगता मुझको डर है।
मैं आकर फँस गई अगर, तो
निकल नहीं पाऊँगी,
तुम मुझको खा लोगी या मैं
भूखी मर जाऊँगी।
मैं उड़कर जा रही वहाँ पर
उस हलवाई के घर,
लड्डू जहाँ थाल में रक्खे
और नहीं कोई डर।

निरंकर देव सेवक
चित्र - दुर्गाबाई

चकमक समाचार

'धमईया' के संग खूब मज़े किए बच्चों ने

भारतीय जन नाट्य संघ की हरदा इकाई ने बीस मई से दस जून तक एक नाट्य शिविर आयोजित किया। 'धमईया' नाम के शिविर में अस्सी बच्चों ने भाग लिया। इस शिविर में बच्चों ने सामूहिक लोकनृत्य, पेंटिंग, क्राफ्ट और जनगीत जैसी गतिविधियों का लुत्फ उठाया। इस शिविर में जबलपुर के रंगमण्डल 'विवेचन' ने प्रशिक्षण दिया। 'अंधेर नगरी' और 'हाथ आएगा' जैसे नाटकों का मंचन भी इस अवसर पर हुआ। आखिरी दिन साढ़े चार सौ पालकों के सामने बच्चों ने कई प्रस्तुतियाँ दीं।

शिविर आयोजित

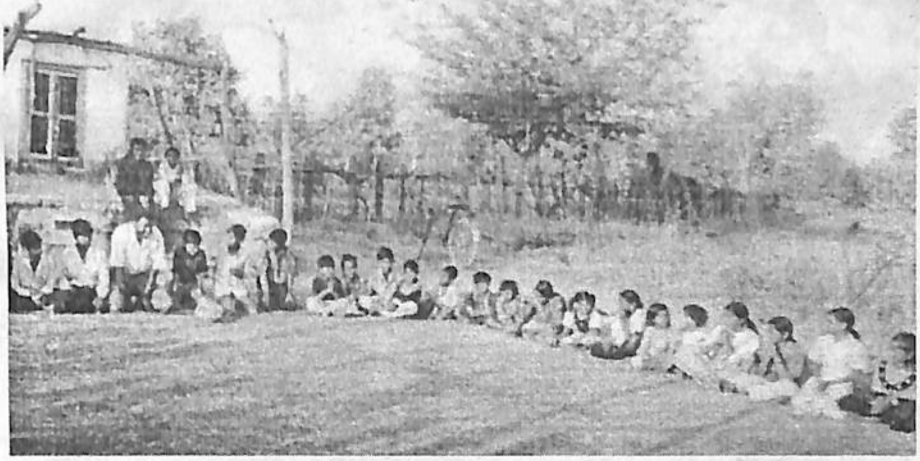

म. प्र. के देवास ज़िले के अजनास, मानसरोदा, खातेगाँव, कवलास, हरणगाँव, पलासी, रतनपुर, लकड़ानी गाँव में तीन दिनी गतिविधि शिविर हुए। थोड़े न बहुत एक हज़ार बच्चों ने इन शिविरों का लुत्फ उठाया। जी भरकर गतिविधियाँ कीं। विज्ञान के खिलौने, कागज़ के खिलौने, मोर, रबर के छल्लों से ग्रीटिंग कार्ड जैसी दर्ज़नों गतिविधियाँ बच्चों ने कीं। खेल, सामूहिक अभिनय गीत भी बच्चों ने खूब पसंद किए।

दोनों रपट : योगेश मालवीय

पिटारा उत्सव सम्पन्न

पिछले महीने के आखिरी हफ्ते में भोपाल में पिटारा उत्सव हुआ। इस पाँच दिनी जश्न में बच्चों ने दर्ज़न भर गतिविधियाँ कीं। पिटारा एकलव्य द्वारा संचालित एक ऐसा ठिया है जहाँ बच्चों की बेहतरीन किताबों

के साथ साथ शिक्षा पर किताबें और खिलौने भी मिलते हैं। पिटारा हर साल शहर के बच्चों के लिए ऐसे शिविर करता है। पिटारा में यूँ साल भर बच्चों से जुड़ा कोई न कोई आयोजन होता रहता है। इस बार कई बच्चों ने इसी केन्द्र की मदद से एक अद्‌भुत सौर मंडलीय घटना **शुक्र का पारगमन** भी देखी। इसके लिए न सिर्फ केन्द्र से चश्मे मुहैया कराए गए साथ ही इस घटना पर बनी एक बेहतरीन फिल्म भी दिखाई गई।

रपट : मनोज निगम

खेल समाचार

कबड्डी

मुंबई में उन्नीस नवम्बर से कबड्डी का पहला विश्वकप होगा। इस जमावड़े में तेरह मुल्कों की टीमें भाग लेंगी। हमारे अलावा पाकिस्तान, जर्मनी, थाइलैण्ड, वेस्टइण्डीज़ जैसी बेहतरीन टीमें भाग लेंगी। विश्वकप जीतने वाली टीम को एक करोड़ की राशि मिलेगी।

स्टेफी ग्राफ को मिला हाल ऑफ फेम

क्रिकेट

क्रिकेट में इन दिनों एशिया कप मुकाबले चल रहे हैं। एक तरफ भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका जैसी मजबूत टीमें हैं तो बंग्लादेश और स्कॉटलैण्ड जैसी उभर रही टीमेंभी हैं। अभी तक कोई बड़ा उलटफेर तो नहीं हुआ है। श्रीलंका, भारत और पाकिस्तान दोनों टीमों को हराकर फायनल में पहुँच चुकी थी। और भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले मुकाबले से फायनल की दूसरी टीम का चयन होना था।

ATHENS 2004

एथेंस ओलम्पिक

अगले महीने की 13 तारीख से एथेंस ओलंपिक के मुकाबले शुरू हो जाएँगे। हमारे 78 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। कुछ जाँबाज़ एथलीटों को तुम इस ओलम्पिक में नहीं देख पाओगे। अमेरिका के टिम मोंटगुमरी एथेंस क्वालीफाइंग दौड़ में सातवें स्थान पर रहे। इसी मुकाबले में एथेंस के एक सम्भावित विजेता मौरिस ग्रीन ने 9.91 सेकेण्ड में सौ मीटर का फासला पार कर पहला स्थान पाया। तीन बार की ओलम्पिक चैम्पियन मेरियन जोंस पाँचवें स्थान पर रही हैं। हालाँकि उन्होंने लम्बी कूद के लिए क्वालीफाई कर लिया है।

दौड़ाक टिम मोंट गुमरी

चित्र-पहेली

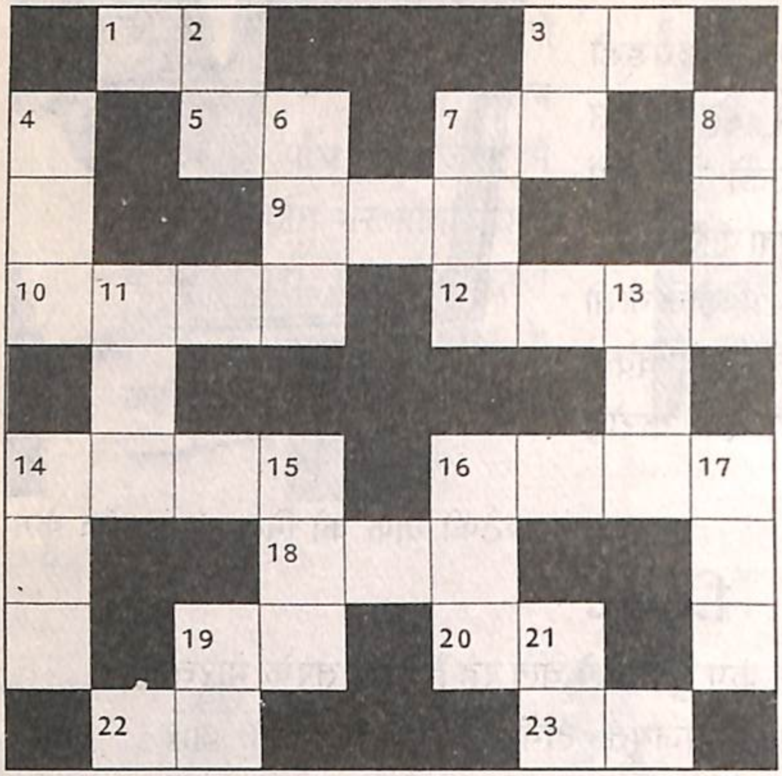

संकेत : बाएँ से दाएँ

1.

3.

5.

7. चिड़िया उड़ गई .. र (2)

9. जो कहानी आदि चीज़ें लिखता है (3)

10.

12.

14.

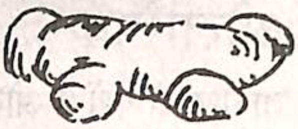

16.

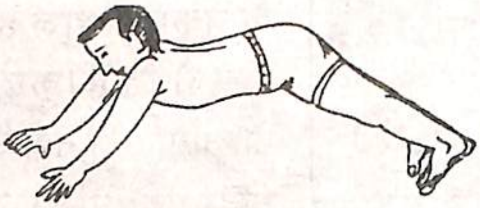

18.

19.

20.

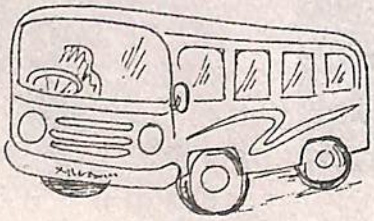

22.

23.

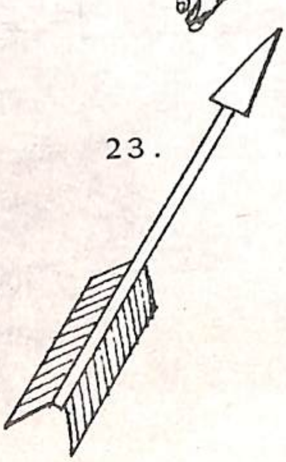

संकेत : ऊपर से नीचे

2. **रस** में है हमारे शरीर का एक हिस्सा

3.

4.

6.

7.

8. **मयस्सर** में है वक्त (3)

11.

13.

14.

15.

16. **बकरी** में है पास (3)

17.

19. प्रति : चकमक, ई–7/453 अरेरा कालोनी, भोपाल, म.प्र.

21.

या वारिस में है एक और एक का चौथाई

जून 2004 अंक के माथापच्ची व चित्र पहेली के हल

1.

ग्यारह वर्ग! है न

2.

3	3	3

नौ भेड़ों को चार खानों में ऐसे खड़ा करना था कि हर खाने में वे एक विषम संख्या में रहें। हर खाने में तीन और सबसे बड़े खाने में नौ!

	आ	म				बी	स	
झ		ई	ख		ऐ	ड़ी		
ड़			जू	ठ	न			सी
प	र	का	र		क	र	ना	ल
	ब						वि	
क	र	त	ब		द	म	क	ल
ड़ा			से	ह	रा			हँ
		ता	रा		ज	टा		गा
	भा	ला				ल	ता	

मच्छरों ने खोला ब्लड-बैंक

एक बार मच्छरों को ब्लड-बैंक खोलने का विचार आया। तय हुआ कि जानवरों का खून इकट्ठा करने के लिए मच्छर अपने डंक का इस्तेमाल करेंगे। और फिर इन्हें बोतलों में भरकर रखा जाएगा। उत्साह से भिन-भिन करते हुए मच्छर चल पड़े। रास्ते में जो भी मिलता उसे रोककर अपनी बात सुनाते। जिसने भी उनकी बात सुनी, खूब प्रशंसा की। सबकी शाबासी पाकर मच्छर फूले न समाए और दुगुने उत्साह से काम में जुट गए।

मच्छरों ने तय किया कि एक रक्तदान शिविर लगाया जाए जिसमें वन के सभी प्राणी रक्तदान करें। बात ही बात में शिविर के लिए दिन और जगह तय हो गई। प्रचार-कार्य की ज़िम्मेदारी कौए, हिरन और मछली को सौंपी गई। सब अपने-अपने काम में लग गए। कौए ने घूम-घूमकर सारे पक्षियों को खबर दी। हिरन ने ज़मीन पर रहने वाले प्राणियों तक खबर दी। मछली भी पीछे न रही। उसने जल में रहने वाले सारे जंतुओं को जानकारी दे दी।

निश्चित दिन सब बरगद के नीचे आ जुटे। बड़ी भीड़ थी। तिल भर की जगह नहीं थी। शोर से सारा वातावरण गूँज रहा था। छोटे प्राणी बड़े प्राणियों के कंधों पर सवार थे। बरगद की डालें पक्षियों के भार से झुकी जा रही थीं। बगल के तालाब में मगरमच्छ उत्साह से अपनी पूँछ पटक-पटककर पानी उछाल रहे थे, जिससे मछलियाँ और कछुए उछलकर बार-बार ज़मीन पर आ गिरते। वन का राजा शेर भी अपने मंत्रियों सहित आया। वह एक ऊँची चट्टान पर बैठा हुआ था।

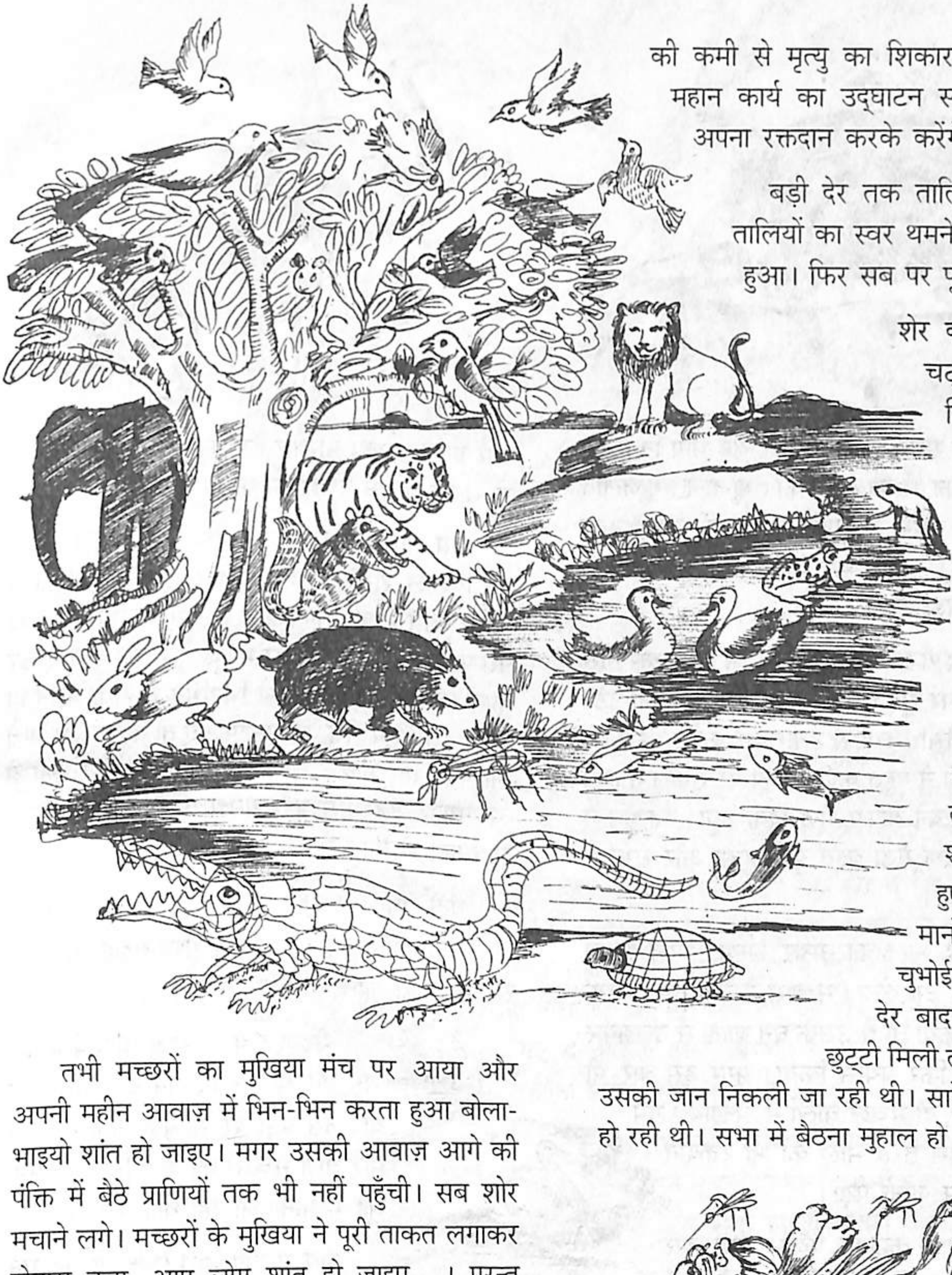

की कमी से मृत्यु का शिकार नहीं होगा। इस महान कार्य का उद्घाटन स्वयं महाराज शेर अपना रक्तदान करके करेंगे।"

बड़ी देर तक तालियाँ बजती रहीं। तालियों का स्वर थमने पर स्वागत-गान हुआ। फिर सब पर फूल बरसाए गए।

शेर को एक बड़ी-सी चट्टान पर लिटा दिया गया। चुने हुए एक दर्जन चुस्त मच्छर रक्त निकालने के लिए उसके शरीर से जा चिपके। कुछ ही पलों में शेर का बुरा हाल हो गया। मच्छर बुरी तरह से उसके शरीर पर चिपके हुए थे। लग रहा था मानो बहुत-सी सुइयाँ चुभोई जा रही हों। कुछ देर बाद जब रक्तदान से छुट्टी मिली तो खुजली के मारे उसकी जान निकली जा रही थी। सारे शरीर में जलन हो रही थी। सभा में बैठना मुहाल हो गया था। बर्दाश्त

तभी मच्छरों का मुखिया मंच पर आया और अपनी महीन आवाज़ में भिन-भिन करता हुआ बोला- भाइयो शांत हो जाइए। मगर उसकी आवाज़ आगे की पंक्ति में बैठे प्राणियों तक भी नहीं पहुँची। सब शोर मचाने लगे। मच्छरों के मुखिया ने पूरी ताकत लगाकर दोबारा कहा, आप लोग शांत हो जाइए....। परन्तु प्राणियों को केवल उसका मुँह खुलता-बंद होता दिखा। सब ठहाके लगाने लगे। शेर भी मुस्कुराया।

तब कौए ने आकर मंच सम्भाला और अपनी कड़क आवाज़ में बोला, "भाइयो, शोर बंद कीजिए। हम लोग यहाँ एक पवित्र और महान कार्य के लिए इकट्ठा हुए हैं। आज के बाद इस वन में कोई प्राणी खून

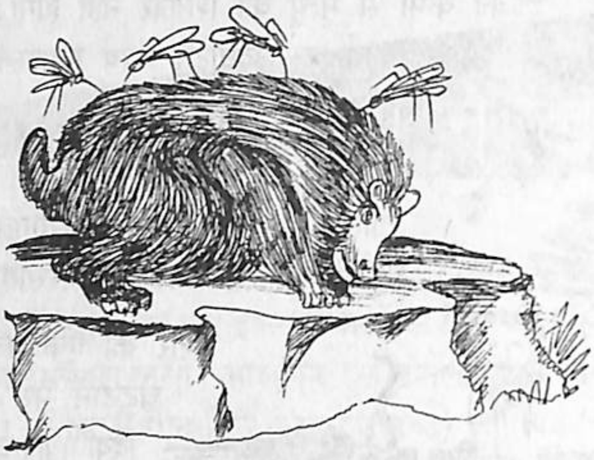

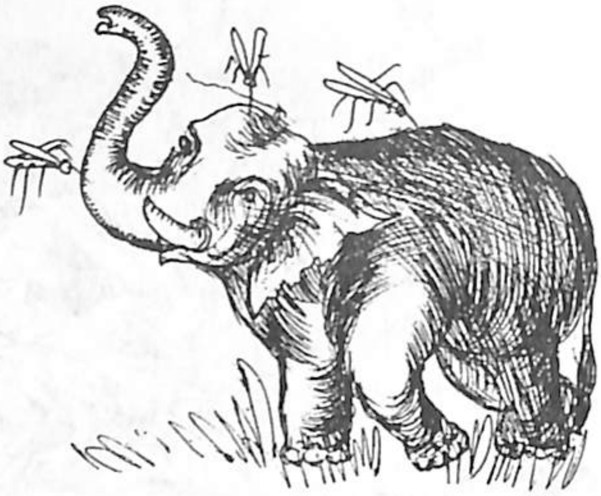

के बाहर होते ही सबसे क्षमा माँगकर वह भाग निकला। सीधा अपनी गुफा में जाकर रुका। खुजलाते-खुजलाते उसके हाथ-पैर बेदम हो गए। शरीर में जगह-जगह खरोंचें लग गईं। घण्टों बाद जब चैन मिला तो वह निढाल होकर पड़ा रहा।

शेर के बाद गैंडा आया। मच्छरों ने लपककर जैसे ही उसके शरीर पर सुई चुभोई कि दर्द से बिलबिला उठे। गैंडे की पत्थर जैसी त्वचा से टकराकर कई मच्छरों की सूंडें टूटीं। मच्छरों ने बहुत कोशिश की पर सफल न हुए। आखिरकार गैंडे को वापस भेज दिया गया। रक्तदान न कर पाने के कारण गैंडा बहुत दुखी हुआ और सभा से उठकर चला गया।

गैंडे के बाद भालू का नम्बर आया। भालू झूमता हुआ चट्टान पर आ लेटा। मच्छरों ने जब उसका रक्त लेने का प्रयास किया तो वे उसके घने बालों में उलझकर रह गए। उन्होंने फिर प्रयास किया। मगर इस बार भी सफल न हुए। हाँ, दो मच्छर बालों में उलझकर गुम ज़रूर हो गए। इस तरह भालू को भी रक्तदान किए बिना वापस जाना पड़ा।

भालू के बाद कछुआ पहुँचा। इस बार मच्छर सावधान थे। वे गैंडे वाली गलती दुहराना नहीं चाहते थे। वे कछुए के गर्दन और पैरों से जा लिपटे। कछुआ दर्द से चीख उठा। उसे लगा उसके मुलायम शरीर पर किसी ने अंगारे रख दिए हों। वह बड़ी देर तक सहता रहा। पर जब सहन-शक्ति जवाब दे गई तो उसने अपना शरीर खोल में समेट लिया। मच्छर खिसियाकर रह गए।

सारे प्राणी ठहाका मारकर हँस पड़े। जितना मिला उसी से संतोष करके मच्छरों ने कछुए को विदा कर दिया।

इस बार रक्तदान करने हाथी आगे आया। हाथी का विशाल शरीर देखकर मच्छर फूले न समाए। वे फौरन काम में जुट गए। कोई पीठ से जा चिपका, कोई पैरों पर जा बैठा, कुछ ने पेट में सुई चुभो दी। कुछ मच्छर कान तक जा पहुँचे। उनकी भिनभिन से हाथी बेचैन हो उठा। उसने सूप जैसे कान फटफटाए तो कई मच्छर नीचे आ गए। सारे मच्छर घबरा गए कि यह तूफान कहाँ से आ गया? जब सारी बात समझ में आई तो वे दोबारा सावधानी से काम में लग गए।

घंटों तक जुटे रहने के बावजूद उन्हें निराशा ही हाथ लगी। हाथी की मोटी त्वचा भेदकर बड़ी मुश्किल से उन्हें थोड़ा-बहुत रक्त मिल सका।

मेंढक बड़ी देर से चुपचाप बैठा था। वह मन ही मन में जाने क्या सोच रहा था। उसे बड़ी देर से भूख लगी हुई थी। मोटे ताज़े मच्छरों को देख-देखकर उसके मुँह में पानी आ रहा था।

जब उसकी बारी आई तो वह मन ही मन फूल उठा। वह चुपचाप चट्टान पर जाकर लेट गया। जब मच्छर उसका रक्त लेने लगे तो बड़ी चतुराई से उसने दो मच्छरों को मुँह में दबा लिया। पर तभी एक मच्छर ने उसके पेट में सुई चुभो दी। मेंढक को बड़ी ज़ोर की गुदगुदी हुई। वह हँसने लगा तो मच्छर निकल भागे। अब

तो हँसते-हँसते मेंढक का बुरा हाल हो गया। जैसे-जैसे वह पेट खुजलाता उसे और हँसी आती। वह हँसता-हँसता तालाब में जा कूदा।

देर शाम तक काम करते-करते मच्छर बेहद थक गए थे। सो मच्छरों ने शिविर बंद करने की घोषणा कर दी। सारे प्राणी वापस चले गए।

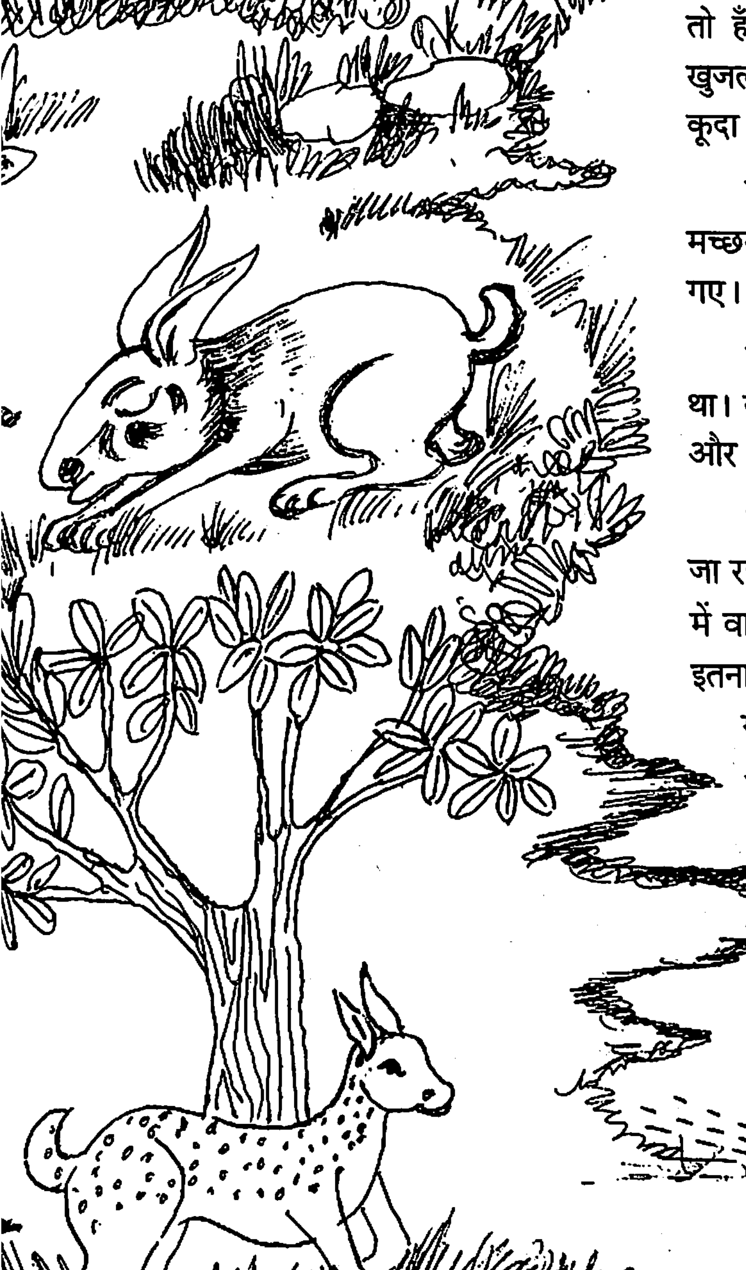

दूसरे दिन शेर की गुफा के आगे भीड़ जमा थी। शेर बीमार पड़ा था। बुखार से उसका शरीर तप रहा था। उसे मलेरिया हो गया था। और वह चार-पाँच रज़ाइयाँ ओढ़े थर-थर काँप रहा था।

खरगोश के दोनों गाल इतने सूज गए थे कि उसकी आँखें मुँदी जा रही थीं। कछुए के हाथ-पैर सूजकर इतने मोटे हो गए थे कि खोल में वापस नहीं जा रहे थे। कबूतर ने खुजली के कारण अपना शरीर इतना नोचा था कि सारे पंख टूट गए थे। हिरन के शरीर में घाव हो गए थे क्योंकि उसने खुजली से परेशान होकर खुरदरे पेड़ से अपना शरीर रगड़ लिया था।

तभी काँव-काँव चिल्लाता कौआ उधर आ निकला। उसने सूचना दी कि ब्लड-बैंक में एक भी मच्छर नहीं है और सारी खाली बोतलें औंधी पड़ी हैं।

सभी उधर भागे। जाकर देखा तो कौए की बात सच निकली। बोतलों में रक्त की एक बूँद भी नहीं बची थी। मच्छरों का भी कहीं अता-पता न था।

मोहम्मद अरशद खान

चित्र - अशोक चंचल

बिन पानी रहे कंगारू चूहा

उत्तरी अमेरिका के रेगिस्तान का मूल निवासी कंगारू चूहा पानी नहीं पीता। तो फिर यह ज़िंदा कैसे रहता है? यह सवाल मुझसे एक बच्चे ने पूछा था। दरअसल उसने अपनी पाठ्य पुस्तक में यह पढ़ा था।

हो सकता है कि इस सवाल को पढ़कर आपको भी अचरज हो रहा होगा। असल में यह चूहा अपने जीवन में कभी भी पानी पीता ही नहीं। पिएगा भी कैसे? इसको पानी नसीब ही नहीं होता। ऐसे में इसके शरीर में ऐसी व्यवस्थाएँ हैं कि वो बिन पानी पिए ही ज़िंदा रह सकता है। लेकिन एक बात साफ कर लें कि कोई भी जीव पानी के बिना तो नहीं रह सकता। जीवन को चलाने के लिए पानी तो चाहिए। और यह भी, कि जीवों के शरीर में कुल वज़न का कोई तीन-चौथाई हिस्सा पानी ही होता है।

हमारे आसपास कई जीव दिखते हैं जो बिना पानी के लम्बे समय तक रह सकते हैं। जैसे छिपकली, साँप और कीट आदि। ये जो भोजन करते हैं उसके माध्यम से शरीर में पानी की पूर्ति कर लेते हैं। कंगारू चूहा भी अन्य चूहों की तरह ही अनाज, बीज आदि खाता है। इसके शरीर में भी अन्य प्राणियों की तरह ही लगभग 70 फीसदी पानी होता है। तो चलिए, यह जानने की कोशिश करते हैं कि कंगारू चूहा बिन पानी पिए भी अपने शरीर में पानी का जुगाड़ कैसे करता है।

कंगारू चूहे को रोज़ाना कोई 60 मिली लीटर पानी की ज़रूरत होती है। यह लगभग 6 मि.ली. पानी तो अपने भोजन से प्राप्त करता है। जिन बीजों को हम सूखा मानते हैं उनमें भी कुछ मात्रा में पानी होता है। क्योंकि आखिर बीज भी तो जीवित है। यदि कंगारू चूहा रोज़ाना 100 ग्राम बीज खाता है तो उसको 6 मि.ली. पानी मिल जाता है। और बाकी के 54 मि.ली. पानी का निर्माण उसके शरीर में विभिन्न रासायनिक क्रियाओं के दौरान होता है। इस प्रकार उसके शरीर में 60 मि.ली. पानी का इंतज़ाम हो जाता है। लेकिन यह भी उतना ही ज़रूरी है कि जितना पानी है उसको किफायत से खर्च किया जाए।

वैसे किसी भी प्राणी के शरीर में जितना पानी रहता है, खर्च भी उतना ही होता है। पर पानी के शरीर में आने और निकलने का एक संतुलन बना रहता है। अगर ऐसा न हो तो निर्जलन का खतरा हो सकता है। रेगिस्तान में पाए जाने वाले तमाम जीव-जंतुओं की यह खूबी होती है कि उनके शरीर से पानी का खर्च नपे-तुले तरीके से होता है। अब कंगारू चूहे के शरीर में यदि 60 मि.ली. पानी है तो खर्च भी लगभग उतना ही होगा।

जंतुओं के शरीर से पानी का खर्च मल-मूत्र, पसीना और साँस के द्वारा होता है। कंगारू चूहे की पेशाब में पानी की मात्रा कम होती है। इसलिए इसकी पेशाब काफी गाढ़ी होती है। इसी प्रकार से मल के साथ भी काफी कम पानी खर्च होता है। मूत्र और मल के साथ क्रमशः 13.5 और 2.6 मि.ली. पानी खर्च होता है। इसी प्रकार छोड़ी गई साँस में 43.9 मि.ली. पानी खर्च होता है। इनके शरीर से पसीने के रूप में पानी का कोई खर्च नहीं होता है। पानी बचाने का इनका एक और तरीका यह है कि ये भरी दोपहरी में अपने बिलों में ही दुबके रहते हैं, जहाँ ठंडक और नमी बनी रहती है।

के.आर. शर्मा

मिलिशा दुभाषे, चौथी, देवास, म.प्र.

टीना, पाँचवीं, हरणगाँव, देवास, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05

भोपाल मेरी नज़र से

योगेन्द्र साहू, 11वीं, भोपाल, म.प्र.

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद राय